आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" अप्रैल 2025

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 32
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

।वर्ष –26 ।अंक–4 ।चैत्र – वैसाख मास स.2082। अप्रैल 2025

जय श्री राम

दुनिया चले ना श्री राम के बिना,
राम जी चले ना हनुमान के बिना।

जब से रामायण पढ़ ली है,
एक बात मैंने समझ ली है,
रावण मरे ना श्री राम के बिना,
लंका जले ना हनुमान के बिना॥

लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,
कौन बूटी लाने के काबिल था,
लक्ष्मण बचे ना श्री राम के बिना,
बूटी मिले ना हनुमान के बिना॥

सीता हरण की कहानी सुनो,
'बनवारी' मेरी जुबानी सुनो,
वापिस मिले ना श्री राम के बिना,
पता चले ना हनुमान के बिना॥

बैठे सिंघासन पे श्री राम जी,
चरणों में बैठे हैं हनुमान जी,
मुक्ति मिले ना श्री राम के बिना,
भक्ति मिले ना हनुमान के बिना॥

– जयशंकर जी

जय राम जी की

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

"विधाता का यह कैसा विधान,छीन लिया हमारा स्वाभिमान!
सूनी है राहें गमगीन है मन,आपकी यादों में डूबे हैं स्वजन"!!

स्वर्गीय श्री महेश चन्द्र चतुर्वेदी

(जन्म 16/5/36 - निधन 20/2/25)

सुपुत्र स्व. श्री चन्द्रमणि एवं स्व श्रीमती बिंदु चतुर्वेदी, (मैनपुरी/लखनऊ)

वरिष्ठ संरक्षक चतुर्वेदी मंडल, लखनऊ

श्रृद्धावनत

सुपुत्र	:	सर्वश्री अतुल, डॉ मनोज, राजीव
पुत्रवधू	:	श्रीमती विभा, श्रीमती नीलिमा
पुत्री-दामाद	:	नीलम, श्रीमती नम्रता - श्री विवेक
पौत्र	:	तन्मय
पौत्री- दामाद	:	तुहिना-नलिन, तुषिता एवं आरुषि - मृदुल,
दौहित्र	:	रुद्रांश व शान्तनु

तथा समस्त चन्द्रमणि परिवार

चन्द्रायतन,3, नेहरू नगर, लखनऊ, (उ०प्र०) - 226004!

मो०-9307057493/ 9839197492

(र.क्र. 3114)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	5
संपादकीय	6
मैं रघुपति कथा सुनाई	7
हनुमान जी अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता	8
नव सम्वत्सर	11
"वाणिनी एवं पतंजलि"	13
राशिफल वर्ष 2025 (संवत्सर 2082)	15
आहार -नियम भारतीय 12 महीनों अनुसार	18
आयुर्वेदिक दोहे सेहत के लिए	19
सिप (SIP) -सुरक्षित बचत	20
शाखा समाचार	23
छपते-छपते	27
समाज समाचार	30
बिछड़े स्वजन	30

अंक 4
अप्रैल 2025, वर्ष - 26

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा)

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री सुदीप जी (फिरोजाबाद), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), श्री कैलाश जी(देवास), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा)

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर)

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल)

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक, श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली, श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जहांगीरपुर), श्री सौरभ "आशू" (पुरा), श्री समर्थ (होलीपुरा), श्री शैलेन्द्र (फरौली), श्री मधुर (पुरा), श्री धर्मेश चतुर्वेदी (पिनाहट)।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2)श्री विवेक जी, मुंबई 3)श्री अजय जी,लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी,कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) डॉ. अरुण चतुर्वेदी, नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा 24) नृपेंद्र जी, फिरोजाबाद

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश जी (कोलकता) सह-संयोजक (3) श्री नवीन जी (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) (5) श्री आशीष जी (कोलकाता) (6) श्री नमन जी (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील जी (जयपुर) (8) श्री हेमंत जी (कोलकाता) (9) श्री नमन जी (लखनऊ) (10) श्री दिवस जी (लखनऊ) (11) श्री शशांक जी (जमुआ रामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

मुझे शौहरत कितनी भी मिले, मैं हसरतें नहीं रखती।
सब भूल जाती हूं, पर दिल में नफरतें नहीं रखती।।

आदरणीय बंधुवर/भगिनी
सादर पालागन
चैत्र नवरात्रि एवं नव संवतसर की शुभकामनाएं एवं बधाई।
होली का रंगारंग पर्व सभी लोगों ने परिवार सहित हर्ष पूर्वक मनाया होगा। होली मिलन के कार्यक्रम विभिन्न शाखा सभाओं के माध्यम से आयोजित किया जा रहे हैं। यह एक बड़ी प्रसन्नता की बात है। समाज में सहचर की भावना का विकास निरंतर हो रहा है। छोटे–छोटे नगरों, एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भी जहाँ हमारे सामाजिक बंधुओ के सीमित परिवार रह रहे वहां पर भी होली मिलन के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। दक्षिण भारत में जहाँ हिंदी भाषी परिवार अल्पसंख्या में है उन नगरों में होली मिलन कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हुई तथा हमारे परंपरागत होलियो का गायन एक सुखद वातावरण निर्मित कर रहा। हमारे नवयुवक और नवयुवतियॉ एवं किशोर बालक बालिकाओ की उपस्थिति इस बार भदावर के गांव में काफी संख्या में रही। उन लोगों का रुझान भी बढ़ रहा है। आधुनिक कानफोडू संगीत से वह भी ऊब चुका है। पुराकन्हेरा , होलीपुरा, तालगाँव, एवं पिनाहट में होली गायन का आनंद लिया। अन्य ग्राम जैसे फरौली जहांगीरपुर ,तरसेखर ,कम्पिला करौली के ग्रामो में हुये होगे ।इस बारे में हम लोगों को और अधिक प्रयास करके सपरिवार आने का कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए। मैं हर वर्ष किशोर किशोरियों की संख्या बढ़ती देख रही हूँ। होली गायन एवं होली खेलने का जो आनंद आता है वह अकल्पनीय है। पिनाहट में इस वर्ष प्रथम बार होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया सामाजिक बन्धुओ की काफी संख्या में उपस्थित उत्साहवर्धक रही। मेरा उन शाखा सभाओं से विशेष आग्रह जहाँ होली मिलन के कार्यक्रम का आयोजन नहीं होता वह अवश्य ही इस संबंध में विचार करें। महासभा के महिला प्रकोष्ठ के द्वारा होली गायन के कार्यक्रम विभिन्न शहरों में आयोजित हो चुके हैं और कुछ के शहरों में आयोजित होने वाले हैं शाखा सभाओं के कार्यक्रम में महिलाओं की उपस्थिति एवं होली गायन में भागीदारी उत्साह वर्धक है। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का बैनर लगाकर गायन श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के प्रति निष्ठा दर्शाता है। शाखा सभा के सभी सम्माननीय अध्यक्षों से आग्रह है होली मिलन के कार्यक्रम के समाचार चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशन हेतु अवश्य भेजें। चतुर्वेदी चंद्रिका के पृष्ठो की संख्या सीमित है। इस कारण जो भी समाचार प्राप्त हो रहे हैं तथा होंगे वह अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यो से एवं सभी समाज प्रेमियों सेआग्रह है महासभा को और अधिक मजबूत एवं सुदृढ करने के लिए महासभा की सदस्यता निरंतर प्रारंभ रखें, हमारी किसी से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है लेकिन महासभा का सभापति का दायित्व होने के कारण मेरा कर्तव्य है की महासभा को और अधिक मजबूत और विकसित करने के लिए आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रयास किया जाए। अन्नपूर्णा योजना मैं समाज का निरंतर सहयोग मिल रहा है उसके लिए सभी साधु–बाद के पात्र हैं। महासभा आर्थिक रूप से और अधिक मजबूत हो इसके लिए गुल्लक योजना को निरंतर चालू रखें। आपकी अपनी चतुर्वेदी चंद्रिका हेतु विज्ञापन के साथ– आपकी रचनाएं आपके सुझाव आमंत्रित हैं। मेरा बहनों से भी आग्रह है यदि वह अपनी रचनाएं अपनी परंपराओं एवं परंपरागत व्यंजनों को प्रकाशन हेतु भेजें तो एक स्थाई स्तंभ भी बनाया जा सकता है जो सिर्फ हमारी मातृशक्ति की बात करेगा। इस हेतु अपने सुझाव आवश्यक रूप से भेजें ताकि स्तंभ को प्रारंभ किया जा सके।

हमारे बहुत से परिवारजन हम लोगों से लिए सदा के लिए बिछड़ कर अनंत आकाश में विलीन हो गए उन सभी पवित्र आत्माओं को मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं साथ ही उनके परिवार जनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हूं। आपकी सुझावों और रचनाओं की प्रतीक्षा में।

सादर पालागन सहित

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

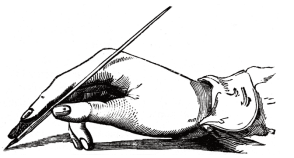

सभी बांधवों का हार्दिक अभिनंदन एवं सादर पालागन!!

30 मार्च 25 से सनातन धर्म का वार्षिक कैलेंडर नवसंवत्सर 2082 विक्रम का शुभारंभ हो रहा है :---

संवत्सरः प्रवृत्तोऽयं नवो नवो भविष्यति!
सुखसमृद्धिभिर्युक्तो भवतु वः सर्वदा!!

अर्थः-यह नवसंवत्सर प्रारंभ हुआ है, यह नवा नवा भविष्य को लेकर आया है, जिसमें आप सभी का जीवन सुख-समृद्धि से भरा रहे।।

नवसंवत्सर का प्रारंभ चैत्र नवरात्रि के साथ होता हैः-

चैत्रे मासि मधुमासि नवरात्रं प्रकाशते! मातृभक्तिपरो यज्ञः सर्वमंगलमयो भवतु!!*

अर्थः--चैत्र मास के मधुमास में नवरात्र का प्रकाश होता है। मातृभक्ति से परिपूर्ण यह यज्ञ आपके जीवन को सभी सुमंगल से भर दे।।

नवरात्र में देवी के नौ स्वरूपो की आराधना करने से उनका आशीर्वाद मिलता हैः--

नवदुर्गा महादेवी नवकल्याणदायिनी! त्वं देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता!!*

अर्थः-- हे नवदुर्गा महादेवी, जो नव कल्याण की दायिनी है, आप सभी जीवों का मातृ रूप में कल्याण करती है।।

हिन्दू विक्रम संवत एक कैलेंडर है जो मुख्य रूप से भारत और नेपाल में उपयोग किया जाता है। यह कैलेंडर भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विक्रम संवत की स्थापना 57 वर्ष ईसा पूर्व में राजा विक्रमादित्य द्वारा की गई मानी जाती है। कहा जाता है कि यह कैलेंडर राजा विक्रमादित्य की शौर्य और विजय की प्रतीक है।

विक्रम संवत का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा और सूर्य के चक्रों के अनुसार समय की गणना करना है। यह कैलेंडर चंद्रमा के चक्रों पर आधारित है, लेकिन इसमें सूर्य के चक्रों को भी ध्यान में रखा जाता है।

विक्रम संवत में महीनों की संख्या 12 होती है, जो कि चंद्रमा के 12 चक्रों के अनुसार होती है। प्रत्येक महीने में 29 या 30 दिन होते हैं।।

विक्रम संवत न केवल एक कैलेंडर है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। यह हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों के साथ ही परंपराओं, त्योहारों तथा पर्वों की तिथियो को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मार्च में ही हम लोगों ने सनातन धर्म के सामाजिक समागम सरोकार, सहभागिता एवं सहयोग के रंगोंत्सव होली का त्योहार मनाया है, होली पर सभी परिवारों में आज भी गुझियों के साथ ही विभिन्न व्यंजनों को तैयार किया जाता है। कुछ वर्षों पूर्व हम सभी रंगों से खेलने के बाद अष्टमी तक एक दूसरे के घर मिलने जाते थे, लेकिन अब आना जाना कम हो गया है,सब आनलाइन होने के बाबजूद हम सब मिलने पर आग्रह करते हैं घर आइयो। हमारा सभी बांधवों से आग्रह है कि त्योहारो पर कुछ ऐसे परिवारों से अवश्य मिलें, जहां रोजमर्रा में नहीं जाते हैं।

23 मार्च 25 को लखनऊ में स्थानीय समाज के सहयोग एवं समर्थन से आयोजित महासभा कार्यकारिणी बैठक एवं होली मिलन समारोह के सफल आयोजन के लिए लखनऊ समाज एवं मंडल के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों तथा स्थानीय महासभा कार्यकारिणी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद एवं बधाइयां।

आप सभी से पत्रिका में लेख एवं सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

नवसंवत्सर 2082, चैत्र नवरात्र, रामनवमी एवं महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं।

राम नवमी के शुभ अवसर पर.....

मैं रघुपति कथा सुनाई

- सुगंधा प्रशांत, उन्नाव

तुलसीदास जी ने रामायण के अंत मे अदभुद चौपाइयों में कैसे लोगो को ज्ञानी, पंडित, गुणी, नीति-निपुण, परम-बुद्धिमान और कैसी स्त्री को धन्य कहा हैं और कैसे कुल को धन्य कहा हैं और कैसी बुद्धि को धन्य कहा हैं और कौनसी घड़ी धन्य हैं और कैसा देश धन्य हैं आदि। अदभुद प्रसंग--

सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता।
सोइ महि मंडित पंडित दाता॥
धर्म परायन सोइ कुल त्राता।
राम चरन जा कर मन राता॥

जिसका मन श्री रामजी के चरणों में अनुरक्त हैं, वही सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) हैं, वही गुणी हैं, वही ज्ञानी हैं। वही पृथ्वी का भूषण, पण्डित और दानी हैं। वही धर्मपरायण हैं और वही कुल का रक्षक हैं।

नीति निपुन सोइ परम सयाना।
श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना॥
सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा।
जो छल छाड़ि भजइ रघुबीरा॥

जो छल छोड़कर श्री रघुवीर का भजन करता है, वही नीति में निपुण है, वही परम-बुद्धिमान है। उसी ने वेदों के सिद्धांत को भली-भाँति जाना है। वही कवि, वही विद्वान तथा वही रणधीर हैं।

धन्य देस सो जहँ सुरसरी।
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी॥
धन्य सो भूपु नीति जो करई।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥

वह देश धन्य हैं, जहाँ श्री गंगाजी हैं, वह स्त्री धन्य है जो पतिव्रत धर्म का पालन करती हैं। वह राजा धन्य हैं जो न्याय करता हैं और वह ब्राह्मण धन्य हैं जो अपने धर्म से नहीं डिगता हैं।

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी।
धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी॥

धन्य घरी सोइ जब सतसंगा।
धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा॥

वह धन धन्य है, जिसकी पहली गति होती है (जो दान देने में व्यय होता है) वही बुद्धि धन्य और परिपक्व है जो पुण्य में लगी हुई है। वही घड़ी धन्य है जब सत्संग हो और वही जन्म धन्य हैं जिसमें ब्राह्मण की अखण्ड भक्ति हो।

(धन की तीन गतियाँ होती हैं- दान, भोग और नाश। दान उत्तम है, भोग मध्यम है और नाश नीच गति है। जो पुरुष न देता है, न भोगता हैं, उसके धन की तीसरी गति होती हैं।)

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुबीर परायन जेहिं नर उपज बिनीत॥

हे उमा! सुनो वह कुल धन्य है, संसार भर के लिए पूज्य है और परम पवित्र है, जिसमें श्री रघुवीर परायण (अनन्य रामभक्त) विनम्र पुरुष उत्पन्न हों।

मति अनुरूप कथा मैं भाषी।
जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई।
तब मैं रघुपति कथा सुनाई॥

मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार यह कथा कही, यद्यपि पहले इसको छुपाकर रखा था। जब तुम्हारे मन में प्रेम की अधिकता देखी तब मैंने श्री रघुनाथजी की यह कथा तुमको सुनाई हैं।

हनुमान जी अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता

- मिथलेश चतुर्वेदी, करेंटी/ लखनऊ

गुणाकरं कृपाकरं सुशान्तिदं यशस्करम।
निजात्मबुद्धिदायकं भजेऽहमञ्जनीसुतम॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अर्थात हम उन अंजनीपुत्र की पूजा करते है जो गुणों के भण्डार है, जो अत्यन्त दयालु है, जो शान्तिप्रद तथा गौरवशाली है और जो शाश्वत आत्मज्ञान के प्रदाता है। मन जैसी स्फूर्ति और वायू जैसे वेग वाले परम बुद्धिमान, इन्द्रिय निग्रही, वानरपति वायुपुत्र हनुमान की हम शरण लेते है।

भारतवर्ष के महान पौराणिक ग्रन्थ जैसे वाल्मीकि कृत रामायण, तुलसीकृत राम चरित मानस, महाभारत, स्कन्द पुराण, शिव पुराण आदि में एक अप्रतिम, अद्भुत एवं चिरंजीवी व्यक्तित्व का वर्णन है जिनको अनेक नामों से जाना जाता है यथा आँजनेय, पवनपुत्र, महावीर, बजरंगबली, संकटमोचन, मारुति, अमितविक्रम, महाबली आदि। हनुमान जी को रुद्रावतार भी कहा जाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का उल्लेख बिना हनुमान जी के सम्भव ही नही है। महाभारत में युद्ध के समय अर्जुन के रथ पर पताका रुप में हनुमान जी उपस्थित है। इन पौराणिक ग्रन्थों के अलावा हनुमान जी का उल्लेख अन्य कई ग्रन्थों में भी किया गया है। जैसे बौद्ध जातक कथाओ में, जैन ग्रन्थ ''पद्मचरित'' में हनुमान जी एक अलौकिक व्यक्तित्व है। भारत के बाहर भी अनेक ग्रन्थों में हनुमान जी का उल्लेख है जैसे थाईलैण्ड की रामायण ''रामकियन''। इसके अतिरिक्त मलेशिया, कम्बोडिया, दक्षिण कोरिया एवं इण्डोनेशिया में हनुमान जी का उनके ग्रन्थो में उल्लेख है तथा उनके मन्दिर भी बने हुये है। हनुमान जी की जन्म तिथि वर्ष में दो बार आती है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान जी का जन्म कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर स्वाति नक्षत्र में हुआ था जो हनुमान जी के प्राकट्य पर्व के रुप में मनाया जाता है। दूसरी ओर एक पौराणिक कथा के अनुसार, हनुमान जी ने सूर्य को फल समझ कर निगल लिया था। इस पर स्वर्ग के राजा इन्द्र ने व्रज का प्रहार कर हनुमान जी को मूर्छित कर दिया था, इससे पवनदेव नाराज हो गये और उन्होने वायू का प्रवाह रोक दिया जिससे हाहाकार मच गया। इसके बाद ब्रह्मा जी एवं अन्य देवताओं ने अंजनीपुत्र को कई दिव्य शक्तियों के साथ दूसरा जीवनदान दिया। यह घटना चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि दिन मंगलवार को हुयी थी। इस प्रकार यदि देखा जाये तो कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि जन्म दिवस है तो दुसरा मूर्छित होने से जाग्रत अवस्था मे आने का अभिनन्दन महोत्सव है, फिर भी जनमानस में चैत्र माह की पूर्णिमा को ही ज्यादा महत्व दिया गया है।

जन्म दिवस की तरह ही हनुमान जी के जन्म स्थान के विषय में भी अनेक मत है। वाल्मीकि कृत रामायण के किष्किंधा काण्ड में आंजनेय पर्वत का उल्लेख है। इस नाम के कई पर्वत अथवा गाँव भारत देश के अनेक प्रदेशों में है एवं इसी आधार पर वह अपने यहाँ हनुमान जी का जन्म स्थान बताते है। कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, गुजरात एवं झारखण्ड में कई जगहो को हनुमान जी का जन्म स्थान माना जाता है। कर्नाटक के कोप्पल और बेल्लारी जिले में स्थित अंजनी पर्वत को, महाराष्ट्र के अंजनेरी-नासिक-त्रयम्बकेश्वर के पहाडों में, आन्ध्र प्रदेश के तिरुपति में, हरियाणा प्रदेश के कैथल जिला जिसे पहले कपिस्थल कहा जाता था में, गुजरात के डांग जिले के अंजनी पर्वत पर स्थित अंजनी गुफा एवं झारखण्ड के गुमला जिले के आंजन धाम में हनुमान जी का जन्म स्थान माना जाता है। प्रमुख रुप से यह माना जाता है कि कर्नाटक के गोकर्ण में कुडले समुद्र तट पर हनुमान जी का जन्म स्थान है तथा किष्किन्धा की अंजनेयाद्रि पहाड़ी क्षेत्र हनुमान जी की कर्मभूमि थी। यही पर भगवान राम से प्रथम बार उनका मिलन एवं वार्ता हुयी थी। आन्ध्र प्रदेश के तिरुमला संस्थान ने वर्ष 2020 में एक टीम का गठन किया है जो वेंकटचलम महात्म्य, अनेक पुराणो एवं वाराहमिहिर की वृहतसंहिता के आधार पर शोध कर हनुमान जी के जन्म स्थान का निर्धारण करेगी। कर्नाटक सरकार भी आंजनेयाद्रि हिल पर 50.18 करोड़ की लागत से हनुमान जन्म स्थल को विकसित कर रही है।

महावीर हनुमान जी की माता अंजनि एवं पिता केसरी थे एवं वह सुमेरु पर्वत पर रहते थे। माता अंजनि एवं केसरी के छह पुत्र थे जिसमें हनुमान जी सबसे बड़े थे। हनुमान जी के अन्य भाईयों के नाम ब्रह्म पुराण के अनुसार मतिमान, श्रुतिमान,

केतुमान, गतिमान एवं धृतिमान थे। हनुमान जी अखण्ड ब्रह्मचारी है लेकिन उनकी तीन पत्नियाँ सुवर्चला, अनंगकुसुमा एवं सत्यवती थी। हनुमान जी ने सूर्यदेव को अपना गुरु माना था तथा उनसे षिक्षा ग्रहण की थी। पाराशर संहिता के अनुसार भगवान सूर्यदेव ने हनुमान जी से गुरुदक्षिणा के बदले में अपनी पुत्री का विवाह हनुमान जी से किया था लेकिन विवाह के पश्चात सुर्वचला अपनी तपस्या में लीन हो गयी। तेलंगाना के खम्मम जिले के येल्नाडु गाँव में विश्व का एकमात्र मन्दिर है जहाँ हनुमान जी एवं उनकी पत्नी सुवर्चला देवी की प्रतिमा स्थापित है। ''पौम चरित'' के अनुसार हनुमान जी की दूसरी पत्नी का नाम अनंगकुसुमा था जो रावण की पुत्री थी एवं तीसरी पत्नी सत्यवती वरुण देव की पुत्री थी। यह दोनो विवाह वरुण देव एवं रावण के मध्य युद्ध से सम्बन्धित है। वरुण देव ने हनुमान जी की सहायता से युद्ध जीतने पर अपनी पुत्री का विवाह हनुमान जी से किया, वही रावण ने युद्ध में हारने के पश्चात अपनी पुत्री का विवाह हनुमान जी से किया था। पौराणिक एवं लोक कथाओं के अनुसार हनुमान जी के एक पुत्र भी था जिसका नाम मकरध्वज था और वह पताल के राजा महिरावण का सेनापति था। हालांकि वाल्मीकि रामायण में मकरध्वज का उल्लेख नही है। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी ने भले ही तीन विवाह किये हो परन्तु उन्होने कभी वैवाहिक जीवन व्यतीत नही किया और हनुमान जी अखण्ड ब्रह्मचारी हैं।

वाल्मीकि रामायण में सुन्दर कांड में हनुमान जी के कार्यो का वर्णन है जिसमें लंका प्रस्थान से लेकर लंका दहन एवं वापिसी का उल्लेख है। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लगभग 126 ग्रन्थो की रचना की गयी जिसमें राम चरित मानस, विनय पत्रिका एवं हनुमान चालीसा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राम चरित मानस एवं हनुमान चालीसा का पठन-पाठन हमारे घरों एवं मन्दिरों में होता ही रहता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान चालीसा के माध्यम से हनुमान जी के बल, बुद्धि एवं पराक्रम का वर्णन किया है। हमारी धार्मिक मान्यता है कि एकमात्र हनुमान जी ही ऐसे भगवान है जो पृथ्वी पर सशरीर उपस्थित है क्योकि वे चिरंजीवी है। चिरंजीवी का अर्थ है अजर-अमर होना। हमारी पौराणिक धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार ये आठ लोग अजर-अमर है। कहा गया है कि

''अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविनः।।

सप्तैता- संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम। जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित।।''

अर्थात अश्वत्थामा, दैत्यराज बलि, वेद व्यास, हनुमान जी, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम एवं मार्कण्डेय ऋषि ये आठ

महामानव अजर अमर है और उनका प्रातः स्मरण करने से मनुष्य 100 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। हनुमान जी को, रामरचित मानस एवं हनुमान चालीसा के अनुसार जब वे लंका में माता सीता को खोजते हुये अशोक वाटिका में पहुँचकर माता सीता को भगवान राम का संदेश देते है तो माता जानकी प्रसन्न होकर हनुमान जी को अपना आर्शीवाद प्रदान करती है। यह चैपाई है

''अजर अमर गुन निधि सुत होई।
करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।
करहूँ कृपा प्रभु अस सुनि काना।
निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।।

अर्थात हे पुत्र! तुम अजर अमर और गुणो की खान हो जाओं। श्री रघुनाथ जी तुम पर कृपा करें। ऐसा सुनते ही हनुमान जी पूर्ण प्रेम में मग्न हो गये। राम चरित मानस एवं पद्म पुराण के अनुसार जब भगवान राम अपने निज धाम जाने के लिये सरयू नदी के गुप्तार घाट पर जल समाधि लेने गये तो हनुमान जी अत्यन्त व्याकुल होकर बोले, प्रभू, माता सीता ने मुझे अमर होने का वरदान दिया है लेकिन आपके बिना मै पृथ्वी पर क्या करुँगा। इस पर भगवान राम ने कलयुग के अन्त तक धरती पर रहकर भगवत कथा का प्रचार प्रसार करने का आदेश दिया। इसीलिये हनुमान जी अजर अमर है तथा उनको कलयुग का देवता कहा जाता है।

चिरंजीवी होने के अतिरिक्त माता सीता द्वारा हनुमान जी को अष्ट सिद्धि एवं नव निधि का स्वामी एवं दाता होने का वरदान दिया था क्योंकि इनको सम्हालने की क्षमता सिर्फ हनुमान जी में ही थी। हनुमान चालीसा की एक चैपाई है

"अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता।।"

हनुमान चालीसा के अतिरिक्त मार्कण्डेय पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी अष्ट सिद्धियों का उल्लेख किया गया है। हनुमान जी के अतिरिक्त देव कोषापति कुबेर जी के पास भी नव निधियाँ है लेकिन अन्तर केवल इतना है कि कुबेर जी किसी को ये निधियाँ नही दे सकते है लेकिन हनुमान जी ये निधियाँ किसी को भी प्रदान कर सकते है। हनुमान जी की आराधना से उक्त सिद्धियां एवं निधियाँ मनुष्य को प्राप्त हो सकती है। लेकिन क्या हम जानते है कि यह अष्ट सिद्धि और नव निधियाँ क्या है। सबसे पहले जानते है कि अष्ट सिद्धि कौन-कौन सी होती है। ये अष्ट सिद्धियां है 1) अणिमा सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति सूक्ष्म रुप धारण कर सकता है, 2) महिमा सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति विशाल रुप धारण कर सकता है, 3) गारिमा सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति अपने शरीर को जितना चाहे भारी कर सकता है, 4) लघिमा सिद्धि - इस सिद्धि से व्यक्ति अपने शरीर को जितना चाहे हल्का बना सकता है, 5) प्राप्ति सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति अपनी इच्छित वस्तु पा सकता है, 6) प्रकाम्य सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति अपनी इच्छानुसार पृथ्वी में समा सकता है और आकाश में उड़ सकता है, 7) ईश्त्व सिद्धि – इस सिद्धि के कारण व्यक्ति में ईश्वरत्व का वास हो जाता है और अन्तिम 8) वशित्व सिद्धि – इस सिद्धि से व्यक्ति किसी को भी अपने वश में कर सकता है।

इसी प्रकार नव निधियाँ जो कुबेर के कोशागार में है, को सबसे कीमती माना गया है और इन निधियों के प्राप्त होने पर किसी तरह की धन सम्पति की आवष्यकता नही पड़ती है। ये नव निधियाँ निम्न प्रकार हैः-

पद्म निधि : पद्म निधि के लक्षणों से संपन्न मनुष्य सात्विक गुण युक्त होता है, तो उसकी कमाई गई संपदा भी सात्विक होती है। सात्विक तरीके से कमाई गई संपदा से कई पीढ़ियों को धन-धान्य की कमी नहीं रहती है। ऐसे व्यक्ति सोने-चांदी रत्नों से संपन्न होते हैं और उदारता से दान भी करते हैं।

महापद्म निधि : महापद्म निधि भी पद्म निधि की तरह सात्विक है। हालांकि इसका प्रभाव 7 पीढ़ियों के बाद नहीं रहता। इस निधि से संपन्न व्यक्ति भी दानी होता है और 7 पीढियों तक सुख ऐश्वर्य भोगता है।

नील निधि : नील निधि में सत्व और रज गुण दोनों ही मिश्रित होते हैं। ऐसी निधि व्यापार द्वारा ही प्राप्त होती है इसलिए इस निधि से संपन्न व्यक्ति में दोनों ही गुणों की प्रधानता रहती है। इस निधि का प्रभाव तीन पीढ़ियों तक ही रहता है।

मुकुंद निधि : मुकुंद निधि में रजोगुण की प्रधानता रहती है इसलिए इसे राजसी स्वभाव वाली निधि कहा गया है। इस निधि से संपन्न व्यक्ति या साधक का मन भोगादि में लगा रहता है। यह निधि एक पीढ़ी बाद खत्म हो जाती है।

नंद निधि : नंद निधि में रज और तम गुणों का मिश्रण होता है। माना जाता है कि यह निधि साधक को लंबी आयु व निरंतर तरक्की प्रदान करती है। ऐसी निधि से संपन्न व्यक्ति अपनी तारीफ से खुश होता है।

मकर निधि : मकर निधि को तामसी निधि कहा गया है। इस निधि से संपन्न साधक अस्त्र और शस्त्र को संग्रह करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का राजा और शासन में दखल होता है। वह शत्रुओं पर भारी पड़ता है और युद्ध के लिए तैयार रहता है। इनकी मृत्यु भी अस्त्र-शस्त्र या दुर्घटना में होती है।

कच्छप निधि : कच्छप निधि का साधक अपनी संपत्ति को छुपाकर रखता है। न तो स्वयं उसका उपयोग करता है, न करने देता है। वह सांप की तरह उसकी रक्षा करता है। ऐसे व्यक्ति धन होते हुए भी उसका उपभोग नहीं कर पाता है।

शंख निधि : शंख निधि को प्राप्त व्यक्ति स्वयं की ही चिंता और स्वयं के ही भोग की इच्छा करता है। वह कमाता तो बहुत है, लेकिन उसके परिवार वाले गरीबी में ही जीते हैं। ऐसा व्यक्ति धन का उपयोग स्वयं के सुख-भोग के लिए करता है, जिससे उसका परिवार गरीबी में जीवन गुजारता है।

खर्व निधि : खर्व निधि को मिश्रित निधि कहते हैं। नाम के अनुरुप ही इस निधि से संपन्न व्यक्ति अन्य 8 निधियों का सम्मिश्रण होती है। इस निधि से संपन्न व्यक्ति को मिश्रित स्वभाव का कहा गया है। उसके कार्यों और स्वभाव के बारे में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। माना जाता है कि इस निधि को प्राप्त व्यक्ति विकलांग व घमंडी होता हैं, यह मौके मिलने पर दूसरों का धन एवं सुख भी छीन सकता है।

उक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि इस पृथ्वी पर एकमात्र जीवित एवं जाग्रत देवता एवं रुद्र के अवतार हमारे हनुमान जी है। जहाँ हनुमान जी है, वहाँ श्री राम और माता सीता है और जहाँ श्री राम एवं माता सीता की स्तुति की जाती है या पाठ किया जाता है, वहीं हनुमान जी होते है। दिनांक 12 अप्रैल 2025 को हनुमान जी का जन्मोत्सव है। हम पूरी श्रद्धा से जाग्रत देवता हनुमान की पूजा, अर्चना एवं आराधना करें। हमारी धार्मिक मान्यता है कि जो व्यक्ति मंगलवार के दिन विधिपूर्वक भगवान हनुमान जी की पूजा-अर्चना करता है, उसे बजरंगबली का आशीर्वाद प्राप्त होता है और सभी कार्यों में सफलता मिलती है। साथ ही जीवन के हर संकट से निजात मिलती है। आइये हम सब मिल कर हनुमान जी की जय बोलते है और उनके जीवन कार्यो से प्रेरणा ग्रहण करते है।

नव सम्वत्सर

- डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी
साहित्याचार्य, एम.ए., पीएच.डी.

किसी भी धार्मिक कर्मकाण्ड का आरंभ संकल्प से होता है। बिना संकल्प के कोई पूजा अधूरी मानी जाती है। संकल्प में श्रृष्टि का काल चिन्तन किया गया है। यह ब्रह्मा जी से जुड़ा हुआ है। भगवान ब्रह्मा जी से जुड़ा हुआ है। भगवान ब्रह्मा के एक दिन को पृथ्वी पर एक कल्प कहा गया है। उनके एक दिन में पृथ्वी पर चौदह मन्वन्तर होते हैं, तथा सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग की चतुर्युगी,जिसे महायुग कहा जाता है। एक हजार बार आती है। एक चतुर्युगी में (महायुग) में 432 करोड़ वर्ष होते हैं। 100 वर्ष की आयु वाले ब्रह्माजी वर्तमान में 50 वर्ष के हो चुके हैं, इक्यावनवे वर्ष के पहले माह का पहला दिन चल रहा है। इस दिन का भी कुछ कम आधा भाग बीत चुका है। इस दिन में होने वाले 14 मनुओं में से 6 मनु पूर्व में हो चुके हैं। वर्तमान में 7वां मन्वनतर चल रहा है। इसका अर्थ है कि ब्रह्माजी के इस एक दिन का मध्यान्त काल चल रहा है। भगवान आदित्य का एक नाम विवस्वान है। उनकी पत्नी संज्ञा से हुए ज्येष्ठ पुत्र श्राद्धदेव इस समय मनु हैं। विवस्वान के पुत्र होने के कारण संकल्प में इनको वैवस्वत मनवन्तर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। एक मनवन्तरे में लगभग 72 महायुग (चतुर्युग) होते हैं। इस वैवस्वत मनवन्तर की यह अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का अंतिम युग कलियुग चल रहा है। जहां तक कल्प की बात है धरती पर पांच कल्प बताये गये है–महत, हिरण्य, ब्रह्म, पद्म एवं वराह। वर्तमान में 4 कल्प व्यतीत हो चुके हैं तथा पांचवां बराह कल्प चल रहा है। इसे भी संकल्प में बोला जाता है। जहां तक युग की बात है ये चार हैं।सतयुग

1–सतयुग–इस युग की आयु 4000 दिव्य वर्ष तथा 800 सन्ध्या एवं सन्ध्यांश के मिला कर कुल 4800 वर्ष की देवताओं के लिये हैं। मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होता है। अतः देवताओं का एक वर्ष मनुष्यों के 360 वर्ष के बराबर होता है। इस प्रमाण से पृथ्वी पर इस युग की आयु। 7 लाख 28 हजार वर्ष हुई तथा इसका प्रारंभ कार्तिक शुक्ल नवमी से माना गया है।

2–त्रेतायुग–त्रेतायुग की आयु 3600 वर्ष देवताओं के तथा पृथ्वी पर 12 लाख 96हजार वर्ष की मानी गई, तथा इसका आरंभ वैशाख शुक्ल तीज को माना गया है।

3–द्वापर युग– इस युग की आयु 2400 देन वर्ष तथा पृथ्वी

पर 8 लाख 64 हजार वर्ष मानी गई है। इसका आरम्भ फाल्गुन कृष्ण अमावस्यों को माना गया है।

4–कलियुग–इस युग में देवताओं के 1200 वर्ष एवं पृथ्वी के 4 लाख 32 हजार वर्ष माने गये हैं, तथा इसका आरंभ आश्विन कृष्ण त्रयोदशी को माना गया है। इस प्रकार चतुर्युगी के काल का विभाजन किया गया है।

2 परमाणु=1 अणु, 3 अणु=1 त्रसरेणु, त्रसरेणु=1 त्रुटि, 100 त्रुटि=वेध, 3 वेध=1 लव, 3 लव=1 निमेष, 3 निमेष=1 छण, 5 छण =1काष्ठा, 15 1काष्ठा=1 लघु, 15 निमेष–1 छण, 5 छण–1 काष्ठा, 15 काष्ठा=1 लघु 15 लघु=1 नाडिका (दण्ड), 2 नाडिका=1 मुहूर्त और दिन के घटने बढ़ने के अनुसार (दिन एवं रात्रि की दोनों सन्धियों के दो मुहूर्तो को छोड़कर) 6 या नाडिका–1 प्रहर होता है। यह याम कहलाता है जो दिन या रात का चौथा भाग होता है। 6 पल ताम्बे का एक ऐसा बरतन बनाया जाये जिसमें एक प्रस्थ जल आ सके और 4 मासे स्वर्ण की 4 अंगुल लंम्बी सलाई बनाकर उसके द्वारा उस बर्तन के पेंदे में छेद करके उसे जल में छोड़ दिया जाये। जितने समय में 1 प्रस्थ जल उस बर्तन में भर जाये, वह बर्तन में डूब जाये उतने समय को 1 नाडिका कहते हैं।

4 प्रहर का दिन एवं 4 प्रहर की रात्रि होती है, 15 दिन रात का एक पक्ष होता है। जिसे शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष कहा गया है। इन दोनों को मिला कर एक मास होता है। 2 मास की एक ऋतु और 6 मास का अमन होता है। ये 2 है उत्तरायन एवं दक्षिणायन

इस प्रकार 2 अमनों में 12 मास होते हैं तथा इन 12 मासों की एक वर्ष होता है। इस वर्ष को सम्वत्सर कहते है। इनकी संख्या 60 है जो इस प्रकार है- 1 प्रभव, 2 विभव, 3 शुक्ल, 4 प्रमोद, 5 प्रजापति, 6 अंगिरा, 7 श्रीमुख, 8 भाव, 9 युव, 10 धाता, 11 ईश्वर, 12 बाहु धान्य, 13 प्रमाधि, 14 विक्रम, 15 वृष, 16 चित्रभानु, 17 सुभानु, 18 तारण, 19 पार्थिव, 20 व्यय, 21 सर्वजित, 22 सर्वधारी, 23 विरोधी, 24 विकृति, 25 खर, 26 नंदन, 27 विजय, 28 जय 29, मन्मथ, 30 दुर्मुख, 31 हेमलंबी, 32 विलंबी, 33 बिकारी, 34 शार्बरी, 35 प्लन, 36 शुभकृत, 37 शोभकृत, 38 क्रोधी, 35 विश्वावसु, 40 पराभव, 41 प्लवंग, 42 कीलक, 43 सौम्य, 44 साधारण, 45 विरोधकृत, 46 परिधावी, 47 प्रमादी, 48 आनन्द, 49 राक्षस, 50 अनल, 51 पिंगल, 52 काल, 53 सिद्धार्थी, 54 रौद्र, 55 दुर्मति, 56 दुंदभी, 58 रूधि रोद्गारी, 58 रक्ताक्षी, 59 क्रोधन, 60 क्षय। ये सम्वत्सर प्रतिवर्ष आते रहते हैं। इनके जनक भी प्रजापति ब्रहमा हैं।

चैभ शुक्ल प्रतिपदाः-

'चैत्रे मासि जगद ब्रतमा ससर्ज प्रथमे हनि'

अर्थात चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ब्रहमाजी ने सृष्टि रचना का आरम्भ किया, उन्होंने देवगणों को बुला कर उनसें भी सृष्टि रचना में सहयोग करने को कहा और उनकी आज्ञा से देवगण भी इसी दिन से सृष्टि रचना में संलग्न हो गये। अतः यत दिन वर्ष का प्रथम दिन माना जाने लगा। इस दिन ब्रहमाजी के पूजन के साथ समय, निमेष, त्रुटि, लव-क्षण, काष्ठा, कला, नाडी, मुहूर्त, प्रहर, दिन, रात आदि का मंम सहित पूजन किया जाने लगा। आगे चलकर उसी दिन कुछ विशेष घटनायें भी घटित हुई। जैसे-वसु नाम के राजा की तपस्या से प्रसन्न होकर देवराज इन्द्र ने उसे मनुजेन्द्र बनाया था। चौदह वर्ष के वनवास के पूर्ण कर मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम इसी दिन अयोध्या वापस लौटे थे। वही भारत के परम प्रतापी महाराज विक्रमादित्य ने भी अपने विक्रम सम्वत की स्थापना इसी दिन ही की थी, जो आप भी विक्रम सम्वत के नाम से प्रसिद्ध है। वासन्तिक नवरात्र के रूप में भगवती मां दुर्गा की साधना भी इसी दिन से प्रारम्भ होती हैं। वेदों की रक्षा करने के लिये भगवान विष्णु ने इसी दिन मत्स्यावतार धारण किया था।

भरत के राम

- **राजीव रंजन चतुर्वेदी**, एडमंटन, कैनेडा

मिटाकर अंधकार जग से
उजाला लेकरआये हैं
आज सब गाओ स्वागत गीत
भरत के राम आये हैं !
पादुका कब से बिलख रही
छूने को चरण रज प्रभु की
पूर्ण हुई भरत की प्रतिज्ञा
राम अयोध्या लौट आये हैं !
सजाओ अपने-अपने घर
बजाओ ढोल और वीणा
करो सब हर्षपूर्ण वन्दन
आज रघुनन्दन आये हैं !
शत्रुघ्न करते अगुवायी
सरयू पाँव पखारन आई
गावें राम चरण सुखदायी
भारत के राजा आये हैं !
उतारें माता शुभ आरती
आशीषों की वर्षा बरसाती
गुरुजन गावे मंगलाचार
सिया संग राम आये हैं !
दिखाओ हृदयों के उदगार
मनोरम होवे जय जयकार
करो न्यौछावर अपनी प्रीत
अयोध्या के लाल आये हैं !
साथ में लखन से हैं भ्राता
और हैं हनुमत से वीरा
करने नव युग का निर्माण
भरत के रघुवर आये हैं !
छायेगी खुशियों की बहार
करेंगे हर जन का कल्याण
करेंगे भारत का उद्धार
मर्यादा पुरूषोत्तम आये हैं !!

"वाणिनी एवं पतंजलि"

- भरत चतुर्वेदी, (होलीपुरा/इंदौर)

कुछ समय पूर्व तक के विदित कालखण्ड में आर्यावर्त में अनेक मनीषियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। यहां पर मैं विद्धजन मण्डलीक मण्डन श्री पाणिनि एवं पातंजलि के विषय में ही कुछ लिख रहा हूं। श्री स्वामी हरिशनन्द तीर्थ के होलीपुरा आते जाते रहने एवं निवास की समयावधि में व्यतीत की गई पुण्यभूमि गुफा स्थल पर एक बार हुए वार्तालाप में श्री धनेश पाण्डे ने मुझे श्री पाणिनि के बताये गये शिवताण्डव नृत्य में बजाये गये डमरू से उद्भाषित अनेक शब्द सुनाये थे। यह बात ईस्वी सन 1960-62 की होगी। करीब 60 वर्ष पूर्व सुने गये शब्दों में से मेरे अवचेतन मन में मात्र हय, वर लट-आदि कुछ शब्द ही मेरी स्मृति पटल पर बने रहे और सब विस्मृत हो गये।

जयपुर राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के व्याख्याता श्री कलाधर पाण्डे से एक बार हुए वार्तालाप में मैंने कहा था कि इन्द्रौर स्थित मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में श्री पाणिनि द्वारा बताये गये सूत्रों सम्बन्धित पुस्तक "सिद्धान्त कौमुदी" नहीं है और न ही मुझे अब तक पढ़ने-देखने को मिली है। क्या आप मेरे लिये इस पुस्तक की व्यवस्था कर सकते है। उन्होंने कहा उस पुस्तक को आप अभी भूल जाओ किन्तु आपके लिये उचित "लघु सिद्धान्त कौमुदी" की व्यवस्था मैं कर दूंगा जो बाद में प्राप्त तो हो भी गयी। कुछ रोज पश्चात उनसे मिलने पर मैंने बताया कि इस बीच में पुस्तक के जो पृष्ठ पढ़ता रहा हूँ मेरे अनुभव से वो सब मेरे मानसिक स्तर में बहुत ऊँची है। अतः मुझे अधिक कुछ समझ में नहीं आया। श्री कलाघर जी पाण्डे ने मुस्कराते हुए बताया कि यद्यपि सिद्धान्त कौमुदी पढ़ाना मेरा विषय नहीं है फिर भी यदा-अदा मैं पढ़ाता रहा हूँ और कह सकता हूँ कि भैया कारण श्री पाणिनि को अभी तक मैं भी पूरी तरह से समझा नहीं हूँ। बाद के काल मे ज्ञानार्जन करने पर ज्ञात हुआ कि तत्कालीन संस्कृत भाषा के विशाल स्वरूप को व्याकरण की दृष्टि से परिष्कृत करते हुए इसके व्याकरण को अष्टाध्यायी में समावेषित करके इसके लगभग 4000 सूत्रों को 32 पद में विभक्त किया हुआ है। इनके शिवसूत्र या महेश्वर सूत्र विख्यात है। इन सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य एवं डमरू बजाये जाने पर उद्भासित नाद- ब्रम्ह से मानी जाती हैं। इनसे प्रगटित नवपंच्य (चौदह) में से कुछ पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु सूत्र वहाँ दिये जा रहे हैं- (1) अ, इ, उ, ण (3) ए, ओ, ङ् (5) ह, य, व, र, ट (7) ज, म, ङ, ण, न, म (14) ह, ल।

इन चैदह सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णो को समावेषित किया गया है। प्रथम चार सूत्रों में वर्णो तथा शेष 10 सूत्रों में व्यजनों की गणना की गई है। अधिक ज्ञानार्जन व

जानकारी हेतु गहराई में उतरना होगा। संक्षेप में इतना ही। पातंजल योग सूत्र या राज योग के बारे में/योग सूत्र पातंजल कृत योग दर्शन पर अनेक विद्वानों ने अपनी लेखनी चलाकर अपने-अपने विचार इसके माध्म लिखने में व्यक्त किये हैं। विवेकानन्द जी का भाष्य पढ़ने से पूर्व तक मैं श्री हरि कृष्णदास जी गोयनका का अनुवादित भाष्य आसान श्रेष्ठ तथा सर्व ज्ञानगम्य समझता था, किन्तु श्री विवेकानन्द का भाष्य पढ़ने के बाद इसके अधिक स्पष्ट व सुलभ होने से अन्य कोई भाष्य इस विषय पर पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

पातजंल योग का शारीरिक व्यायाम या करारतबाली योगिक क्रियाओं से दूर का कोई सम्बंध नहीं है वन ही पातजंल के नाम

को भुनाने में दंत मंजन तेल व आयुर्वेदिक औषधि आदि बनाकर बाजार कब्जा कर लेने से कोई सम्बंध है। पातजलि का ज्ञान विशुद्ध रूप से मन ध्यान तथा चित्त से संबंधित है। इस प्रकार से महर्षि पातजल कृत योग दर्शन को आत्मकल्याण के लिये बहुत ही उपयोगी और इसको प्रत्यक्ष उपाय समझा जा सकता है। ईश्वर का सजातीय तत्व आत्मा ही माना जाता है। समझा भी जाता है कि प्रत्येक आत्मा एक अव्यक्ता ब्रहम है। योगशास्त्र में वर्णित प्रायः सभी साधनों का श्रेष्ठ ग्रन्थों यथा श्रीमद्भगवतगीता, भागवत, उपनिषद आदि में समर्थन है तथा इनको सभी समर्थन व सेवन करने का श्रद्धापूर्वक उपदेश करते हैं।

प्रधानतः योग के तीन भेद माने गये हैं एक सविकल्प, दूसरा निर्विकल्प और तीसरा निर्बीज/योग दर्शन की तात्विक मान्यता प्रायः साख्यशास्त्र में मिलती जुलती हूँ। पातजल योग सूत्र योग दर्शन राजयोग का शास्त्र है और इस विषय पर यह सर्वोच्च प्रामाणिक ग्रन्थ है। यह विद्या (योग विद्या राजयोग विधा) मनुष्य को उनकी आम्यन्तरिक अवस्थाओं के पर्यवेक्षण का रास्ता दिखती है। ये समझना आवश्यक है कि मन ही उस पर्यवेक्षण का यन्त्र है। जिस विषय के द्वारा ये आम्यान्तरिक अनुभूमियाँ होती है। उसका नाम ही योग है। मन की एकाग्रता में निरन्तरता से पर्यवेक्षण का मार्ग प्रशस्त्र होता है। ज्ञान लाभ का एक मात्र उपाय एकाग्रता है। हमारे मन की निग्रह शक्ति हमारे अन्दर बहुत कम हैं। मन की निग्रह का सम्बंध प्रथमतः श्वास प्रश्वास की प्रक्रिया को नियमित करने से प्रारम्भ किया माना जाता है। योगियों को मान्यता है कि हमें जन्म के समय में ही एक निश्चित मात्रा में सांसे दी गई है। एक आम आदमी सतही तौर पर एक मिनट में लगभग 18 से 20 बार ऊपरी श्वास लेता है। प्रत्येक श्वास में अन्दर जाने वाली वायु की मात्रा आधा लीटर के करीब होती है लेकिन एक योगी मात्र 4 से 5 बार ही श्वास लेता है और हर श्वास के साथ करीब तीन लीटर वायु अन्दर आती है। जिस तरह से हम श्वास लेते हैं उसका सीधा सम्बंध हमारे मन तथा प्राण से होता है इस शक्ति रूपी प्राण के संयम का नाम ही प्रणायाम हे। यथार्थ प्राणायाम का अधिकारी होने में इस श्वास प्रश्वास प्रक्रिया का सम्बंध बहुत थोड़ा है। यथार्थ अधिकारी होने में यह प्रक्रिया एक उपाय मात्र है। इसके लिये दीर्घकाल व निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

योग के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रसाहार, धारणा, ध्यान और समाधि। योगियों के मतानुसार मेरूदण्ड के भीतर इड़ा और पिंगला नाम के दो स्नायविक शक्ति प्रवाह और मेरूदण्डस्थ मज्जा के बीच सुषुम्ना नाम की एक शून्य नाली है। इस नाली के सबसे नीचे कुण्डलि शक्ति कुण्डलाकार हो विराजमान है। जब यह जगती है तो इस शून्य नाली के अन्दर से मार्ग बनाकर ऊपर उठने का प्रयत्न करती है। साधारणतः योगियों में यह सुशुम्ना खुली रहती है इस सुशुम्ना को प्रथमतः खोलना ही योगियों का उद्देश्य होता है। कुण्डलिनी शक्ति के जाग्रत होकर सुशुम्ना नाड़ी में चलने में क्रमशः छः चक्रों को योग के द्वारा खोलना होता है, ये हैं सबसे नीचे के भाग में अवस्थित भूलाधार इसके बाद दूसरा स्वाधिष्ठान, तीसरा मणिपुर, चौथा अनाहत, पांचवाँ विशुद्धि, छठा आज्ञा चक्र। एक और सातवाँ सहशास्त्र। यह सबसे ऊपर मस्तिष्क में स्थित हैं।

महर्षि पातंजलि कृत योग दर्शन को समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद तथा कैवल्य पाद इन चार खण्डों में समेटा गया है। इस ग्रन्थ में बहुत थोड़े शब्दों में आत्मकल्याण के बहुत ही उपयोगी और प्रत्यक्ष उपाय बताये गये हैं। संबंधित पुस्तकों में 'अथ योगानुशासनम् से अथ' शब्द से उसके प्रारम्भ करने की प्रतिज्ञा से योगसाधना की कर्तव्यता सूचित की है। इसके तुरंत पश्चात पुस्तक की मूल बात का निथोड़ बताया गया है। 'योगाश्चितवृत्ति विरोधः' समाधि पाद-1/2 अर्थात चितको विभिन्न वृतियों अर्थात आकार में परिणत होने से रोकना ही योग है।

'तीव्र संवेगानामासक्रः'- समाधि पाद-1/21 अर्थात जिनके साधन की गति तीव्र है, उनकी (गिर्बीज समाधि) शीध्र (सिद्ध) होती है।

'अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्ता संबोधः'- साधनपाद-2/39 अर्थात अपरिग्रह के दृढप्रतिष्ठित हो जाने पर पूर्वजन्मों की बात स्मृति में उदित हो जाती है।

'बलेषु हस्तिबलादीनि'- विमूतिपाद-3/25 अर्थात हाथी आदि के बल में संयम का प्रयोग करने से योगी के शरीर में उस प्राणी के सदृश बल आ जाता है।

'कण्ठकूपे क्षुत पिपासा निवृतिः' -विमूतिपाद 3/31 अर्थात कण्ठूकप में (संयम करने से) भूख और प्यास को निवृत्ति हो जाती है।

'जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः कैवल्य पाद-4/1 अर्थात जन्म से होने वाली औषधि से होने वाली, मन्त्र से होने वाली, तप से होने वाली और समाधि से होने वाली (ऐसे पांच प्रकार की) सिद्धियाँ होती है। लगभग एक ही कालखण्ड में उद्भूत ज्ञान व अनुभवजन्य उद्गात को प्रगट करने वाले दो कालजयी महापुरूषों से उनके आर्शीवाद की आकांक्षा रखता हूँ, भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति ?-मुण्डक उपनिषद् 1/3-ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसका ज्ञान होने पर सब कुछ ज्ञात हो जाता है।

राशिफल वर्ष 2025 (संवत्सर 2082)

कन्या राशि – वर्ष 2025 में कन्या राशि के जातकों को कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इस साल कुछ फैसले लेने में सफल नहीं होंगे। परिवार के लोगों से मतभेद बढ़ सकते हैं। किसी से आपको आर्थिक मदद मिल सकती है। कई तरह की खराब परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जिस कारण आप काफी परेशान हो सकते हैं। नए साल में स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां परिवार में देखने को मिल सकती है। साल के बीच के समय में आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिसकी वजह से आर्थिक संकट में भी फंस सकते हैं। खानपान पर नियंत्रण रखें। नया साल आर्थिक दृष्टि से आपके लिए उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा। काम में रुकावट आएगी। व्यापार में स्थिति सामान्य रहेगी। काम के लिए किसी से आर्थिक मदद लेनी पड़ सकती है। घर और परिवार में मतभेद खत्म होंगे। नया साल करियर के हिसाब से अच्छा रहने वाला है। परीक्षा में सफलता मिलेगी। करियर को लेकर फैसले लेने में समस्या आ सकती है। अपने लक्ष्य का चयन करें, जिससे आपको सफलता मिलेगी। लव की दृष्टि से नया साल ठीक-ठाक रहेगा। पार्टनर से कुछ बातों को लेकर मतभेद बढ़ सकते हैं, जिससे लव लाइफ में समस्या आ सकती है। पार्टनर के साथ समय बिताएं। पार्टनर से अपने रिलेशनशिप के बारे में बातचीत करें।

तुला राशि– नया साल 2025 तुला राशि के जातकों के लिए खुशियों से भरा रहने वाला है। इस साल आर्थिक लाभ मिलेगा। सभी मनोकामना पूरी होगी। नए साल के शुरुआती दौर में गुरु का गोचर की वजह से कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति देखने को मिल सकती है। किसी काम में कोई परिवर्तन कर सकते हैं। घर में मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। किसी बड़े सम्मान की प्राप्ति होगी। साल 2025 स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। किसी बीमारी से छुटकारा मिलेगा। साथ ही खानपान पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशानियां आ सकती हैं।नया साल आर्थिक तौर से बहुत ही अच्छा रहने वाला है। इस साल कार्यक्षेत्र में कई बड़े फैसले लेंगे। नए काम की शुरुआत कर सकते हैं, जिससे आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। काम के लिए सम्मानित किया जा सकता है। कार्यक्षेत्र को लेकर लिए गए फैसले सफल होंगे। करियर के हिसाब से नया साल शानदार रहने वाला है। परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। वर्ष के बीच के समय में कुछ मानसिक परेशानियां देखने को मिलेंगी। अपने मन को काबू में रखें।

वर्ष 2025 में आप पार्टनर से अपनी मां की बात बोल सकते हैं। आपका पार्टनर आपकी भावनाओं को अधिक महत्व देगा। इस साल लव पार्टनर आपका लाइफ पार्टनर बन सकता है। पार्टनर आपके साथ बेहद खुश रहने वाला है। पार्टनर के संग किसी यात्रा पर जा सकते हैं।

वृश्चिक राशि– वृश्चिक राशि के जातकों के लिए नया साल बहुत ही अच्छा रहने वाला है। इस वर्ष आपको कोई बड़ी खुशखबरी मिल सकती है। पुराने विवाद खत्म होंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपके सम्मान की वृद्धि होगी। वर्ष 2025 स्वास्थ्य की दृष्टि से मिलाजुला रहने वाला है। इस साल आपको किसी बीमारी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में एलर्जी आदि की समस्या देखने को मिल सकती है। अपने और परिवार के लोगों के खानपान पर नियंत्रण रखें। इस साल वाहन दुर्घटना के योग बन रहे हैं।

वित्त – वर्ष 2025 आर्थिक दृष्टि के हिसाब से कार्यक्षेत्र में परिवर्तन कर सकते हैं। नया साल आर्थिक दृष्टि से बहुत ही अच्छा रहने वाला है। व्यापार में लाभ मिलेगा। जॉब कर रहे लोगों के लिए यह साल शानदार रहने वाला है। आपके काम को देखकर लोग प्रभावित होंगे और अधिकारी वर्ग से आपके संबंध मधुर होंगे। वर्ष 2025 करियर को लेकर खुशियों से भरा रहने वाला है। अधिक मेहनत करने के बाद करियर में सफलता मिलेगी। परीक्षा में पास होंगे। किसी नए काम की शुरुआत कर सकते हैं। नए साल में लव लाइफ को लेकर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पार्टनर से मतभेद बढ़ सकते हैं। पार्टनर के साथ कुछ बातों को लेकर रिश्ते में खटास आ सकती है। पार्टनर को कुछ बातों को बातों को इग्नोर करना अच्छा रहेगा।

धनु राशि– आने वाला साल यानी वर्ष 2025 कई तरह की परेशानियों भरा रहेगा। इस साल किसी से वाद-विवाद हो सकता है, जिसकी वजह से बनते काम बिगड़ सकते हैं। अपनी पर्सनल बातें किसी से शेयर न करें। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। नया साल स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक-ठाक रहने वाला है। वर्ष 2025 में आपको किसी बीमारी का सामना करना पड़ सकता है। आप किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। परिवार में किसी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिसकी वजह से आर्थिक गिरावट महसूस होगी। नया साल वित्त की दृष्टि से ज्यादा अच्छा नहीं रहने वाला है। नए साल में आपको कोई नुकसान हो सकता है, जिससे आर्थिक तौर से परेशान हो सकते हैं। पार्टनरशिप से आपको अधिक लाभ नहीं मिलेगा। अपनी प्लानिंग किसी से व्यक्ति से शेयर न करें। नहीं तो आपका काम बिगड़ सकता है। नया साल करियर के हिसाब से ज्यादा अच्छा नहीं रहने वाला है। इस साल आपको करियर को लेकर अधिक मेहनत करनी की आवश्यकता है, जिससे आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। साल के अंत में आपको कोई खुशखबरी मिल सकती है। नया साल लव लाइफ के लिए कई परेशानियों से भरा रहने वाला है। पार्टनर से कुछ बातों को लेकर मतभेद बढ़ सकते हैं। नए साल में परिवार के सदस्य आपके फैसले से सहमत नहीं होंगे। पार्टनर से कुछ बातों को लेकर उलझन बढ़ सकती है।

मकर राशि – साल 2025 आपकी राशि के लिए सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य को देने वाला होगा। इस वर्ष आप कई बड़े निर्णय अपने जीवन में ले सकते हैं, जो सफल भी होंगे। इस वर्ष गुरु का गोचर आपके लिए सुख, धन और संपत्ति प्रदान करने वाला रहेगा। साव के मध्यकाल में कुछ पारिवारिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, जिस कारण आपको मानसिक परेशानियां महसूस होंगी, परिवार में तनाव बना रहेगा। इस वर्ष शनि का गोचर धन लाभ देने वाला रहेगा। साथ ही आप कोई बड़ा कार्य शुरू कर सकते हैं इस वर्ष आप अपना निजी भवन आदि खरीद सकते हैं। इस वर्ष राहु का गोचर लाभकारी सिद्ध होगा, जो समाज में प्रतिष्ठा सम्मान की वृद्धि करेगा। सामाजिक क्षेत्र और राजनीतिक क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों के लिए यह वर्ष खास अच्छा रहेगा। जहां आपकी ख्याति बढ़ेगी, वहीं आपको कोई बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती हैं जिस कारण आपका कद बढ़ेगा। इस वर्ष परिवार के साथ आप सुखद क्षण व्यतीत करेंगे, लंबी यात्रा पर जाने के योग बनेंगे। परिवार के साथ यह वर्ष अच्छा व्यतीत होने वाला है। सामाजिक दृष्टि से इस वर्ष नए संबंध स्थापित होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से साल 2025 अच्छा रहेगा। हालांकि कुछ छोटी-मोटी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं रहेंगी। सिर दर्द, माइग्रेन, छोटी चोट, पेट दर्द और सर्दी आदि का सामना परिवार को करना पड़ सकता है। दैनिक व्यायाम और सूर्य नमस्कार करें। यह आपके करियर के लिए भी लाभकारी रहेगा। यह साल स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, खानपान पर नियंत्रण रखने और नियमित जीवन शैली अपनाने से आप रोग आदि से बचे रहेंगे। साल 2025 आर्थिक तौर से आपके लिए अच्छा रहने वाला है। इस वर्ष व्यापार में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। आप कोई नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। पार्टनरशिप में कार्य कर रहे लोगों के लिए यह वर्ष खास अच्छा रहेगा। आपको भूमि संबंधी कार्यों से लाभ होगा। इस वर्ष शेयर मार्केट में काम कर रहे लोगों के लिए सफलता प्राप्त होगी। नौकरी वर्ग वालों के लिए यह वर्ष करियर में लाभकारी सिद्ध होगा। आपके सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा, आपको विशेष पद आदि से सम्मानित किया जा सकता है।व्यवसाय में लाभ के योग बनेंगे। इस वर्ष कर्ज से मुक्ति मिलेगी और आप नए कार्य की शुरुआत कर सकते हैं। यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा, आर्थिक तौर से लिए गए निर्णय इस वर्ष सफल होंगे। आगामी समय में आपके लिए लाभकारी सिद्ध होंगे। इस वर्ष आप अपने स्वयं के कार्य से लाभ अर्जित करेंगे और कार्यक्षेत्र में बड़ा परिवर्तन दिखाई देगा। साल 2025 करियर की दृष्टि से खास अच्छा साबित होगा। बहुत दिन से परिश्रम कर रहे लोगों को इस वर्ष सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आपको उच्च पद प्राप्त होगा। नौकरी के लिए प्रयास कर रहे लोगों के लिए यह वर्ष सफलता दिलाने वाला रहेगा। परीक्षार्थी छात्रों के लिए इस वर्ष सफलता प्राप्त होगी। अत्यधिक परिश्रम आपके लिए

लाभकारी योग निर्मित करेगा। करियर के क्षेत्र में इस वर्ष आपके निर्णय सफल होंगे। आने वाला साल आपकी लव लाइफ के लिए अच्छा रहने वाला है। इस वर्ष अपने पार्टनर से कुछ नोंकझोंक बनी रहेगी, लेकिन आपका संबंध मजबूत होगा। इस वर्ष आपका पार्टनर अपने मन की बात आपको बोल सकता है। कहा जाए तो इस वर्ष आपका पार्टनर आपका लाइफ पार्टनर बन सकता है। आपके संबंध के बारे में परिवार के लोगों का मत अलग हो सकता है, लेकिन प्रयास करने पर सफलता मिलेगी। यह वर्ष आप अपने लव पार्टनर के साथ अच्छा व्यतीत करेंगे। इस वर्ष लंबी-लंबी यात्राओं पर जाने के योग बन रहे हैं। साथ ही आप अपने पार्टनर के साथ अच्छा समय बिताएंगे। प्रेम-प्रसंग के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है।

कुंभ राशि- कुंभ राशि के लिए जातकों के लिए नया साल अच्छा नहीं रहने वाला है। इस साल आपको कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वाद-विवाद के योग बन रहे हैं। धन की हानि होगी। वाणी पर काबू रखना आपके लिए अच्छा रहेगा। परिवार में कोई दुखद समाचार प्राप्त होगा। स्वास्थ्य के हिसाब से नया साल अच्छा नहीं रहने वाला है। आप किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। मौसम की वजह से सर्दी और एलर्जी की समस्या हो सकती है। परिवार के लोगों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। खानपान पर नियंत्रण रखें। नए साल में आपको धन की हानि होगी। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन करना अच्छा नहीं रहने वाला है। अपने मन की बात किसी से शेयर न करें, जिसकी वजह से आपका बनता काम बिगड़ सकता है। जॉब कर रहे लोगों के लिए यह साल खास रहने वाला है। व्यापार-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। साल 2025 करियर की दृष्टि से ठीक-ठाक रहेगा, लेकिन आपको सफलता प्राप्ति के लिए थोड़ा इंतजार करना पड़ सकता है। मेहनत करने में कमी न करें। छात्रों को अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। नया साल लव लाइफ के लिए खास रहेगा है। पार्टनर से मतभेद हो सकते हैं। इस साल आपको पार्टनर के साथ समझकर चलने की आवश्यकता है। कोई तीसरा व्यक्ति आपकी लव लाइफ को खराब कर सकता है। आप अपने पार्टनर से अपने मन की बात शेयर कर सकते हैं।

मीन राशि - साल 2025 मीन राशि वालों के लिए मिलाजुला रहने वाला है। विवाद से दूर रहें। जॉब में सफलता मिलेगी। शनि के गोचर के दौरान साढ़ेसाती का दूसरा चरण रहेगा। इस दौरान मानसिक परेशानी हो सकती है। इस साल दुश्मन से बचकर रहने की आवश्यकता है। दुश्मन आपके काम को बिगाड़ सकता है। गुपचुप तरीके से काम करने में सफलता मिलेगी। इस साल राहु का गोचर कुछ परेशानी उत्पन्न करेगी। काम में मदद मिलेगा। नए काम की शुरुआत कर सकते हैं। इस साल वाणी पर कंट्रोल रखें। विवादों से दूर रहना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। गाड़ी चलाने में सावधानी बरतें। यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। पत्नी से मतभेद होगा। कुछ बातों को लेकर परिवार के सदस्यों से मतभेद होगा। पत्नी बच्चों के साथ किसी लंबी यात्रा पर जा सकते हैं। वह अपने पारिवारिक जीवन के लिए इस साल कोई बड़ा फैसला आप लेंगे। साल 2025 सेहत की दृष्टि से ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता है। इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव आपके ऊपर रहेगी, जिस कारण सेहत संबंधी परेशानी देखने को मिलेगी। पत्नी और बच्चों के साथ-साथ आपकी सेहत बिगड़ सकती है। पेट दर्द, एलर्जी, सिर दर्द आदि परेशानी देखने को मिलेगी। इस साल वाहन चलाने में सावधानी रखें। परिवार में पत्नी की सेहत बिगड़ सकती है। इस साल खानपान पर कंट्रोल रखना जरूरी है। योग और एक्सरसाइज की मदद लें। सेहत का ख्याल रखें, नहीं तो पैसे खर्च हो सकते हैं। साल 2025 धन-संपत्ति को लेकर मिलाजुला रहेगा। काम में कुछ सफलता कुछ असफलता देखने को मिलेगी। इस साल आप नए काम की शुरुआत कर सकते हैं।पार्टनरशिप से सावधान रहें। पार्टनर आपके साथ धोखा कर सकते हैं। इस साल नया काम शुरू करना फायदेमंद साबित होगा। इस साल आप प्रशासनिक उलझन में फंस सकते हैं। बिजनेस वाले लोगों के लिए यह साल उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। इस साल बिजनेस में पार्टनर लोग धोखा दे सकते हैं, जिससे बनता हुआ काम बिगड़ सकता है।सतर्क रहें। इस साल काम में बड़ा फैसला लेने से पहले अच्छी तरह सोच लें। साल 2025 करियर के लिए ठीक-ठाक रहेगा। कंपटीशन एग्जाम में शामिल होने वाले छात्रों को सफलता मिलेगी। इस साल सेहत संबंधी परेशानी हो सकती है। इस साल नौकरी के लिए प्रयास कर रहे लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस साल अधिक मेहनत करने की जरूरत है। साल 2025 लव लाइफ वालों के लिए मिलाजुला रहने वाला है। कुछ बातों को लेकर पार्टनर से झगड़ा हो सकता है। इससे आप दोनों के बीच दूरियां बढ़ेंगी। इस साल पार्टनर के साथ कोई बड़ी समस्या हो सकती है। अच्छा होगा अपने पार्टनर की बात को समझें। उनके मन में चल रही दुविधा को दूर करें। इस साल आप अपने पार्टनर के साथ लंबी यात्रा पर जा सकते हैं।

आहार -नियम भारतीय 12 महीनों अनुसार

- डॉ मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

चैत्र (मार्च-अप्रैल) – इस महीने में चने का सेवन करे क्योकि चना आपके रक्त संचार और रक्त को शुद्ध करता है एवं कई बीमारियों से भी बचाता है। चैत्र के महीने में नित्य नीम की 4 – 5 कोमल पतियों का उपयोग भी करना चाहिए इससे आप इस महीने के सभी दोषों से बच सकते है। नीम की पतियों को चबाने से शरीर में स्थित दोष शरीर से हटते है।

वैशाख (अप्रैल – मई)- वैशाख महीने में गर्मी की शुरुआत हो जाती है। बेल का इस्तेमाल इस महीने में अवश्य करना चाहिए जो आपको स्वस्थ रखेगा। वैशाख के महीने में तेल का उपयोग बिल्कुल न करे क्योकि इससे आपका शरीर अस्वस्थ हो सकता है।

ज्येष्ठ (मई-जून) – भारत में इस महीने में सबसे अधिक गर्मी होती है। ज्येष्ठ के महीने में दोपहर में सोना स्वास्थ्य वद्ध ंक होता है , ठंडी छाछ , लस्सी, ज्यूस और अधिक से अधिक पानी का सेवन करें। बासी खाना, गरिष्ठ भोजन एवं गर्म चीजो का सेवन न करे। इनके प्रयोग से आपका शरीर रोग ग्रस्त हो सकता है।

अषाढ़ (जून-जुलाई) – आषाढ़ के महीने में आम , पुराने गेंहू, सत्तु , जौ, भात, खीर, ठन्डे पदार्थ , ककड़ी, पलवल, करेला आदि का उपयोग करे व आषाढ़ के महीने में भी गर्म प्रकृति की चीजों का प्रयोग करना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

श्रावण (जूलाई-अगस्त) – श्रावण के महीने में हरड का इस्तेमाल करना चाहिए। श्रावण में हरी सब्जियों का त्याग करे एव दूध का इस्तेमाल भी कम करे। भोजन की मात्रा भी कम ले – पुराने चावल, पुराने गेंहू, खिचड़ी, दही एवं हलके सुपाच्य भोजन को अपनाएं।

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर) – इस महीने में हलके सुपाच्य भोजन का इस्तेमाल कर वर्षा का मौसम् होने के कारण आपकी जठराग्नि भी मंद होती है इसलिए भोजन सुपाच्य ग्रहण करे।

आश्विन (सितम्बर-अक्टूबर) – इस महीने में दूध , घी, गुड़ , नारियल, मुन्नका, गोभी आदि का सेवन कर सकते है। ये गरिष्ठ भोजन है लेकिन फिर भी इस महीने में पच जाते है क्योकि इस महीने में हमारी जठराग्नि तेज होती है।

कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) – कार्तिक महीने में गरम दूध, गुड, घी, शक्कर, मुली आदि का उपयोग करे। ठंडे पेय पदार्थो का प्रयोग छोड़ दे। छाछ, लस्सी, ठंडा दही, ठंडा फ्रूट ज्यूस आदि का सेवन न करे , इनसे आपके स्वास्थ्य को हानि हो सकती है।

अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) – इस महीने में ठंडी और अधिक गरम वस्तुओ का प्रयोग न करे।

पौष (दिसम्बर-जनवरी) – इस ऋतू में दूध, खोया एवं खोये से बने पदार्थ, गौंद के लाडू, गुड़, तिल, घी, आलू, आंवला आदि का प्रयोग करे, ये पदार्थ आपके शरीर को स्वास्थ्य देंगे। ठन्डे पदार्थ, पुराना अन्न, मोठ, कटु और रुक्ष भोजन का उपयोग न करे।

माघ (जनवरी-फ़रवरी) – इस महीने में भी आप गरम और गरिष्ठ भोजन का इस्तेमाल कर सकते है। घी, नए अन्न, गौंद के लड्डू आदि का प्रयोग कर सकते है।

फाल्गुन (फरवरी-मार्च) – इस महीने में गुड का उपयोग करे। सुबह के समय योग एवं स्नान का नियम बना ले। चने का उपयोग न करे।

!! सदा_स्वस्थ_रहे !!

आयुर्वेदिक दोहे सेहत के लिए

- विधि चतुर्वेदी, दिल्ली

1. दही मथें माखन मिले, केसर संग मिलाय,
होठों पर लेपित करें, रंग गुलाबी आय..

2. बहती यदि जो नाक हो, बहुत बुरा हो हाल,
यूकेलिप्टिस तेल लें, सूंघें डाल रुमाल..

3. अजवाइन को पीसिये , गाढ़ा लेप लगाय,
चर्म रोग सब दूर हो, तन कंचन बन जाय..

4. अजवाइन को पीस लें , नीबू संग मिलाय,
फोड़ा-फुंसी दूर हों, सभी बला टल जाय..

5. अजवाइन-गुड़ खाइए, तभी बने कुछ काम,
पित्त रोग में लाभ हो, पायेंगे आराम..

6.ठण्ड लगे जब आपको, सर्दी से बेहाल,
नीबू मधु के साथ में, अदरक पियें उबाल..

7. अदरक का रस लीजिए. मधु लेवें समभाग,
नियमित सेवन जब करें, सर्दी जाए भाग..

8. रोटी मक्के की भली, खा लें यदि भरपूर,
बेहतर लीवर आपका, टी.बी भी हो दूर..

9.गाजर रस संग आँवला, बीस औ चालिस ग्राम,
रक्तचाप हिरदय सही, पायें सब आराम..

10.शहद आंवला जूस हो, मिश्री सब दस ग्राम,
बीस ग्राम घी साथ में, यौवन स्थिर काम..

11. चिंतित होता क्यों भला, देख बुढ़ापा रोय,
चौलाई पालक भली, यौवन स्थिर होय..

12. लाल टमाटर लीजिए, खीरा सहित सनेह,
जूस करेला साथ हो, दूर रहे मधुमेह..

13. प्रातः संध्या पीजिए, खाली पेट सनेह,
जामुन-गुठली पीसिये, नहीं रहे मधुमेह..

14. सात पत्र लें नीम के, खाली पेट चबाय, दूर करे मधुमेह को, सब कुछ मन को भाय..

15. सात फूल ले लीजिए, सुन्दर सदाबहार,
दूर करे मधुमेह को, जीवन में हो प्यार..

16. तुलसीदल दस लीजिए, उठकर प्रातःकाल,
सेहत सुधरे आपकी, तन-मन मालामाल..

17. थोड़ा सा गुड़ लीजिए, दूर रहें सब रोग,
अधिक कभी मत खाइए, चाहे मोहनभोग.

18. अजवाइन और हींग लें, लहसुन तेल पकाय,
मालिश जोड़ों की करें, दर्द दूर हो जाय..

19. ऐलोवेरा-आँवला, करे खून में वृद्धि,
उदर व्याधियाँ दूर हों,जीवन में हो सिद्धि..

20. दस्त अगर आने लगें, चिंतित दीखे माथ,
दालचीनि का पाउडर, लें पानी के साथ..

21. मुँह में बदबू हो अगर, दालचीनि मुख डाल,
बने सुगन्धित मुख, महक, दूर होय तत्काल..

22. कंचन काया को कभी, पित्त अगर दे कष्ट,
घृतकुमारि संग आँवला, करे उसे भी नष्ट..

23. बीस मिली रस आँवला, पांच ग्राम मधु संग,
सुबह शाम में चाटिये, बढ़े ज्योति सब दंग..

24. बीस मिली रस आँवला, हल्दी हो एक ग्राम,
सर्दी कफ तकलीफ में, फ़ौरन हो आराम..

25. नीबू बेसन जल शहद, मिश्रित लेप लगाय,
चेहरा सुन्दर तब बने, बेहतर यही उपाय..

26. मधु का सेवन जो करे, सुख पावेगा सोय,
कंठ सुरीला साथ में, वाणी मधुरिम होय.

27. पीता थोड़ी छाछ जो, भोजन करके रोज,
नहीं जरूरत वैद्य की, चेहरे पर हो ओज..

28. ठण्ड अगर लग जाय जो नहीं बने कुछ काम, नियमित पी लें गुनगुना, पानी दे आराम..

29. कफ से पीड़ति हो अगर, खाँसी बहुत सताय,
अजवाइन की भाप लें, कफ तब बाहर आय..

30.अजवाइन लें छाछ संग, मात्रा पाँच गिराम, कीट पेट के नष्ट हों, जल्दी हो आराम..

सिप (SIP) -सुरक्षित बचत

- रजत चतुर्वेदी, कोलकाता

सिप यानी सिस्टेमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान में निवेशक हर महीने एक निश्चित तारीख पर तय रकम को म्युचुअल फंड योजना में निवेश करते हैं।शेयर बाजार चक्रीय नेचर का होता है, कभी बाजार में तेजी का दौर आता है,उसी तरह गिरावट का दौर आता है। बाजार में उतार चढाव का सिप निवेशकों पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि यह रुपी कास्ट एवेरेजिंग को प्रासंगिक बना देता हैं,रुपी कास्ट एवेरेजिंग एक रणनीति होती है, जिसमें बाजार की परिस्थितियों की परवाह किए बगैर नियमित अंतराल पर एक निश्चित रकम का निवेश करना शामिल है।

इस रणनीति के तहत – जब बाजार में गिरावट का दौर होता है तो निवेश की तय रकम से फंड की अधिक यूनिट खरीदते हैं तो दूसरी तरफ जब बाजार में चढ़ाव का दौर आने पर फंड की कम यूनिट खरीदते हैं। यह रणनीति समय के साथ निवेश की लागत को संतुलित करती हैं,जिससे संभावित रुप से बेहतर रिटर्न मिलेगा।

बाजार में उतार चढाव हमेशा चुनौती ही नहीं होता बल्कि अवसर भी बनाया जा सकता है। उतार चढाव के कारण बाजार में परिसंपत्ति (एसेट) की लागत कम हो सकती है, जिससे आपको किफायती दरों पर गुणवत्ता पूर्ण निवेश का मौका मिल सकता है। लंबी अवधि में जैसे जैसे बाजार में सुधार होगा तो निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है। बाजार में गिरावट होने के दौरान जो निवेशक सिप चालू रखते हैं , उन्हें सिप रोकने या बंद करने वालों की तुलना में अधिक रिटर्न मिल सकता है।सिप चालू रखने पर कंपाउंडिंग यानी चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ भी मिल सकता है।

म्युचुअल फंड योजना में एक या अधिक एसेट क्लास में अलग अलग तरीके से निवेश किया जाता है।इस तरह किसी एक एसेट या सेक्टर या शेयर में गिरावट दूसरे एसेट या सेक्टर के प्रदर्शन से संतुलित हो सकता है। सिस्टेमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान कभी भी शुरू हो सकता हैं, लेकिन सिप के साथ लंबी अवधि तक तक बने रहना आवश्यक है। यदि सरप्लस फंड हो तो गिरावट के दौरान सिप में टांप अप करने से बेहतर रिटर्न मिल सकता है।

सिप योजना उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकती है, जो लंबी अवधि में पूंजी बनाना चाहते हैं। एक मुश्त न्यूनतम राशि रु 500/ है और इसके बाद गुणक में निवेश कर सकते हैं। मासिक, पाक्षिक या साप्ताहिक सिप प्लान भी बना सकते हैं। शेयर बाजार की अनिश्चिता के कारण म्युचुअल फंड कंपनियां क्वालिटी पोर्टफोलियो पर फोकस बढ़ा रही है।

केवल सिप योजना को समझने के लिए मात्र उदाहरण हेतु यदि रु 5000/ मासिक की सिप करने पर 20 साल में आपका निवेश 12 लाख होगा, यदि 12% सालाना के अनुमानित रिटर्न से 20 साल बाद आपका रिटर्न लगभग 50 लाख हो सकता है अर्थात एक अनुमान के अनुसार निवेशक को लगभग 38 लाख का लाभ भी हो सकता है।।

आत्मगमन

– श्रीमती करूणा मिश्रा

लोग कहते हैं जो दुनिया से चले गये
वो फिर क्या कभी मिल पाते हैं
वो तो बस यादों में सिमट कर रह जाते हैं
पर नहीं, शायद हम ही उन्हें पहचान नहीं पाते हैं
कभी कोई अपरिचित इतना अपना सा लगता है
कहते है, वही तो पूर्व जन्म का कोई अपना है
संसार से जाने के बाद
यही आत्मा, जो अजर अमर है
फिर नये शरीर को धारण करती है
और ना जाने कौन कब किस रूप में मिल जाता है
यही तो जन्म जन्मांतरों का नाता है
यही प्रभु का अमिट वरदान है
हर प्राणी में आत्मा का वास है
भगवान किस किस रूप में हमें हमारे बिछुड़ों से मिलाते हैं
और जो चले गये थे
वो हमें फिर से मिल जाते हैं
पर शायद हम ही उन्हें पहचान नहीं पाते हैं

प्रतीक -शिखा द्वारा बाइक से 24 देशों की यात्रा

मेरे छोटे भाई श्री विनोद जी-श्रीमती रक्षा जी (मैनपुरी/लखनऊ)के पुत्र -पुत्रवधू, प्रतीक -शिखा ने 24 अगस्त 2024 को अपनी बी एम डब्ल्यू मोबाइक से 24 देशों की यात्रा के साहसिक अभियान का शुभारंभ इटली के रोम से कर लगभग 4 महीने में 20 हजार किमी से अधिक यात्रा का समापन इंग्लैंड के लंदन में किया। प्रतीक -शिखा पेशेवर बाइकर है, उन्होंने इटली, पौलेंड, हंगरी, आर्सट्रिया, स्वीटजरलैंड, फ्रांस, नार्वे, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, इंग्लैंड, आयरलैंड, वेल्स, स्काटलैंड इत्यादि 24 देशों की यात्रा में नार्वे को विशेष रूप से शामिल किया। नार्वे में सुबह आसमान हरी, नीली एवं नारंगी रोशनी से भर जाता है। प्रतीक -शिखा ने नार्वे में माइनस 10 डिग्री सेल्सियस में भी मोटरबाइक चलाई। प्रतीक -शिखा विश्व भ्रमण कर 4 दिसंबर 24 को भारत लौट आए। इण्डिया बाइक एसोसिएशन ने पणजी, गोवा में 6 दिसंबर 24 को उनके सम्मान में स्वागत समारोह आयोजित किया। लखनऊ के दैनिक जागरण में 18 दिसंबर एवं दैनिक नवभारत टाइम्स में 21 दिसंबर 24 को प्रतीक के यात्रा विवरण को प्रकाशित किया था। प्रतीक सन् 2015 से ही पेशेवर बाइकर के रूप में भारत में भी हिमाचल, उत्तराखंड, तमिलनाडु, कर्नाटक,असम, अरुणाचल एवं मेघालय आदि में डेढ़ लाख किमी से अधिक का भम्रण कर चुके हैं।आप Youtube पर प्रतीक के यात्राओं से संबंधित 375 से अधिक वीडियो Mystic Rider Prateek के नाम से देख सकते हैं। प्रतीक को आप इसी नाम से Instagram पर भी फॉलो कर सकते हैं।

प्रतीक -शिखा के नाम दो रिकार्ड ₹इण्डिया बुक आफ रिकार्डस₹ में भी दर्ज हैः-

1- प्रतीक -शिखा लेह से कन्याकुमारी की 4000 किमी की यात्रा करने वाले पहले couple है।

2-19300 फीट की ऊंचाई पर स्थित Umling La Paas की यात्रा करने वाले भी पहले couple है।

आप सभी सुधी पाठकों विशेष कर युवाओं से अनुरोध है कि प्रतीक -शिखा के विडियो एवं रीलस् देख कर उनको प्रोत्साहित करें।आप लोग प्रतीक से मो०न०--9620342220 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं। ** महेश चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ)

नोटः- पिताजी ने यह आशीर्वाद लेख अपनी मृत्यु पूर्व ही लिखा था,-- अतुल।

(र.क्र.-3114)

श्रद्धांजलि

श्री योगेश कुमार चतुर्वेदी

जन्म दिनांक – 5.7.1946, वैकुंठ गमन – 10.2.2025

अंबर पर देखा करते हैं, जाने कहां गए हो आप। जाने किस दुनिया से हमको छुप कर देख रहे हो आप।।
आंखों में आंसू की धारा और उदासी अधरों पर। अब भी लगता हाथ स्नेह का सर पर फेर रहे हो आप।।

श्री योगेश कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय गुलाब देवी – स्व. खर्गेश नाथ जी (कछपुरा/बदायूं)

आप मोती नगर, लखनऊ निवासी स्वर्गीय महादेवी नरेंद्र नाथ जी (छुल्ली चाचा) के भतीजे थे।
आप बहुत ही सरल स्वभाव व निश्छल हृदय के व्यक्ति थे।

शोक संतृप्त परिवार

पत्नी : उर्वशी चतुर्वेदी
बहन/बहनोई : स्व. मिथिलेश – स्व. सुरेश चंद्र जी (जयपुर)
नीरजा चतुर्वेदी – रमेश चंद्र चतुर्वेदी (तालगांव/लखनऊ)
क्षमा चतुर्वेदी – स्व. कौशलेंद्र चतुर्वेदी (तालगांव/लखनऊ)
पुत्र/पुत्रवधू : मुकुल चतुर्वेदी (मिंटू) – मोहिनी चतुर्वेदी (मोना)
पौत्र : हर्ष चतुर्वेदी
पौत्री : रिद्धि चतुर्वेदी
एवं समस्त शोकाकुल परिवार

पता : चित्रांश नगर, यूनियन क्लब के पीछे, जिला पंचायत बदायूं (उत्तर प्रदेश)

(र.क्र.–3113)

शाखा समाचार

फिरोजाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा फीरोजाबाद की बैठक चौबे

कमलापति की धर्मशाला में दिनाँक 27 फरवरी 2025 को अरविंद चतुर्वेदी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। संचालन शैलेंद्र चतुर्वेदी ने किया। सर्वसम्मति से बनी नई कार्य कारणी में नृपेंद्र चतुर्वेदी अध्यक्ष, देवेंद्र चतुर्वेदी देवू एवं अनुराग चतुर्वेदी शौर्टी उपाध्यक्ष व शिवम चतुर्वेदी मोंटू सचिव, प्रतीक चतुर्वेदी, विनायक चतुर्वेदी, सह सचिव व पीयूष चतुर्वेदी कोषाध्यक्ष, शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी मीडिया प्रभारी, निपुण चतुर्वेदी,आय व्यय निरीक्षक,विनोद चतुर्वेदी सांस्कृतिक सचिव बने।

संरक्षक मंडल में डाक्टर अपूर्व चतुर्वेदी, अतुल चतुर्वेदी राधव ग्लास, दिलीप चतुर्वेदी भैय्या जी, सुदीप चतुर्वेदी टिन्नू भाई साहब, अरविंद चतुर्वेदी,निर्भय चतुर्वेदी हरीश चतुर्वेदी ।

समिति व्दारा सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया गया कि होली मिलन समारोह 16 मार्च 2025 रविवार सांयकाल 5 बजे से आयोजित कराने पर विचार हुआ। बैठक के अंत में उपस्थित बांधवों द्वारा दो मिनट की मौन श्रद्धांजलि समाज की दिवंगत स्वजनों स्व. प्रकाश चन्द्र जी (बादशाह वकील साहब), स्व.ओम प्रकाश जी बजीर, प्रभाष जी बाबू, स्व. श्रीमती लक्ष्मी, स्व के. के. जी, स्व रूद्रदत जी, स्व. श्रीमती रेखा जी,स्व. अशोक जी,स्व. श्रीमती रजनी जी, स्व. निर्मल जी, स्व. डा. मनोज जी, स्व. निशंक जी, स्व. अर्जुन सिंह जी, स्व. प्रेम जी, स्व. मेघ सिंह जी, स्व.शरद जी, स्व.विनोद जी, स्व. कै. व्यास जी, स्व. सुभाष जी, स्व. वशिष्ठ, स्व. विजय वल्लभ जी, स्व. श्रीमती पुष्पा, स्व.प्रदीप जी, स्व.श्रीमती रंभा जी, स्व.अम्बरीष जी, स्व. डॉ. सुभाष जी, स्व.श्रीमती प्रमिला जी,स्व.श्रीमती शानू,स्व. कामता प्रसाद जी, स्व.पलाश जी, स्व. अनिल जी, स्व.डॉ.अनिल जी, स्व.संजय जी, स्व. अजय जी को श्रद्धांजलि देते हुए परिवारीजनों को धैर्य धारण करने एवं मृत आत्मा को शांति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

***

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा का होली मिलन समारोह

16 मार्च 2025 की सांय से जलेसर रोड स्थित फिरोजाबाद क्लब लिमिटेड न्यू रेस्टोरेंट में सभा के अध्यक्ष नृपेंद्र चतुर्वेदी के नेतृत्व में शुरू हुआ। सर्वप्रथम शाखा सभा के कार्यकारणी सदस्यों एवं सरंक्षण मंडल के सदस्यों एवं आगंतुक गायकों का सम्मान माल्यार्पण कर एवं उत्तरी उढ़ाकर

से किया। संचालन सचिव शिवम चतुर्वेदी ने किया।

होली गायन वादन कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए पंकज जी ने गणेश स्तुति प्रस्तुत की। विनायक जी, विभांशु जी एवं स्वर से स्वर मिलाते हुए ममता जी एवं उषा जी ने सुनाया एवं खुब वाहवाही बटोरी। बीच-बीच में फूलों की पुष्प वर्षा होती रही। बीरेंद्र जी ने बरसाने में खेली जा रही होली का वर्णन करते हुए फागुन के गीत सुनाया। होली गीत गायकी शिखा जी एवं शिल्पी जी ने सामुहिक गीत सुनाते हुए कहा होली कैसे खेलूंगी में सांवरिया के संग।

प्रीतिका जी ने होली गीत प्रस्तुत करते हुए सुनाया। कार्यक्रम के अंत में सभी बांधवों ने ठंडाई ,चाट पकोड़ी एवं सुर मधुर भोज का आनंद लिया। होली मिलन समारोह के सफल आयोजन के लिए बांधवों का आभार व्यक्त शाखा सभा अध्यक्ष नृपेन्द्र चतुर्वेदी ने किया । इस अवसर पर संरक्षक मण्डल के अतुल जी, अरविंद जी, सुदीप जी टुन्नु, दिलीप जी, निर्भय जी, हरीश जी, एवं कार्यकारणी अध्यक्ष नृपेंद्र जी, एवं सदस्यगण पीयूष जी, देवेंद्र जी, शिवम जी, देवेंद्र जी, अनुराग जी, नमन जी आदि बांधव उपस्थित थे।

– **नृपेंद्र कुमार चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

***

गाज़ियाबाद

दिनाँक 9-3-2025 को गाजियाबाद शाखा सभा के तत्वाधान में होली मिलन समारोह का आयोजन स्थानीय शनि चौक सामुदायिक केंद्र साहिबाबाद में किया गया। कार्यक्रम सुबह 11:00 बजे से 4:00 बजे तक चला। सुबह से ही कार्यकारिणी के सदस्यगण व्यवस्था में लग गए थे। कार्यक्रम में उपस्थित जनों की संख्या लगभग 350 रही। फाल्गुन मास का उमंग और उल्लास उपस्थित जनों में देखते ही बनता था। होली की मस्ती में भाव विभोर होकर सभी एक दूसरे का दिल खोल के अभिवादन कर रहे थे और पूरा हॉल पालागन - पालागन के स्वर से गूंज रहा था। कार्यक्रम का आरंभ श्री विवेक जी मुक्की की ढोलक की थाप पर श्री प्रदीप जी संजू द्वारा गाई होली सुमंगल दाहिने होली खेलत रामनरेश से हुआ। तदुपरांत होली गायन का सिलसिला आरंभ हुआ जो 3:00 बजे तक चलता रहा एक होली समाप्त होती तो दूसरी होली उठा दी जाती थी। उपस्थित सभी पुरुष और महिलाओं ने होली गायन में बढ़ चढ़ के भाग लिया। होली गायन में विशेष तौर पर गोपाल जी, तीरथ जी, लोकेंद्र जी, बिपिन जी 'बिप्पी', नूतन जी, प्रदुम्न जी, गोकर्ण जी, नीरद जी, तरुण जी, विवेक जी मुक्की, रत्नेश जी, धर्मेश जी ने समा बांध दिया। एक छोटे बालक अंजनेय चतुर्वेदी पुत्र श्री प्रियांशु ने बहुत सुंदर होली गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में उपस्थित पुरुष तथा महिलाओं का वी एन चतुर्वेदी जी एवं हेमंत चतुर्वेदी जी तथा कीर्ति चतुर्वेदी जी द्वारा स्वागत गुलाल एवं चन्दन के द्वारा किया गया।

श्री गौरव जी और राशि जी (माखन भोग) द्वारा पिछले वर्ष के कार्यक्रमों की तरह इस होली मिलन में भी टेंट की व्यवस्था प्रायोजित की गई। सभा ने छोटे बच्चों को पिचकारी देकर उनके मन में होली का उल्लास और बढ़ा दिया। इस बार के कार्यक्रम के दौरान सभा द्वारा नवीन पहल के तौर पर बांधवों के लिए उनके उत्पादों की प्रदर्शनी की स्टाल लगाने की व्यवस्था की गई थी। जिसमें दिग्विजय चतुर्वेदी पुत्र धर्मेंद्र जी, मुन्ना जी द्वारा 'पारंपरिक मिर्च-मसालों' नाम से मसालों की स्टाल लगाई गई एवं अनामिका जी द्वारा बाथरूम क्लीनर की स्टाल लगाई गई। सभा आशा करती है कि ये प्रयोग भविष्य में एक बड़ा असर डालेगी। अंत में सभापति जी श्री प्रदीप चतुर्वेदी 'संजू' जी द्वारा उपस्थित बांधवों का कार्यक्रम में शामिल होने तथा सभा के सचिव अभय चतुर्वेदी एवं कोषाध्यक्ष मणि चतुर्वेदी जी, सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों विशेषकर गौरव चतुर्वेदी माखन भोग, गगन चतुर्वेदी, कीर्ति चतुर्वेदी का निरंतर प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम में शांतनु चतुर्वेदी ने समाज सेवक के तौर पर सभा को अपनी सेवा दी।

- अभय चतुर्वेदी, सचिव

***

गाज़ियाबाद

गुलमोहर गार्डन होली 2025

महाकुंभ की दिव्यता अपनी सफलता के सोपान लिख रही है। अभूतपूर्व - विहंगम संगम स्थान, करोड़ों लोगों की आस्था, स्नान की एक डुबकी के लिए सनातन धर्म को समझने वाले - मानने वालों की निश्चल मशक्कत के दृश्यों ने एक बार फिर से भारतीय संस्कृति को संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध किया है।

आधुनिकता की तेज गति और प्रभुत्व में महाकुंभ में पहुंचने वाला जनसैलाब सनातन संस्कृति की उपस्थिति को प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाता है...अविश्वनीय!!

आध्यात्मिक अनुष्ठानों की श्रृंखला में एक ऐसी यात्रा जो भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सीमाओं को पार करती हुई एक नया अनुभव और उदाहरण प्रस्तुत कर गई, हमने भी देखा और दुनिया ने समझा और शायद अनुभव भी किया, व्यक्तिगत समझ से मुझे नहीं लगता कि बिना आस्था और विश्वास के इस तरह से हम सब एक जैसे लग सकते है एक हो सकते है। महाकुंभ पर्व समापन के बाद ही हमारे समाज का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव प्रारंभ हो गया, बसंत के आगमन से ही होली की उमंगे मन को आनंद की ओर ले जाना प्रारंभ कर देती

है और यह आनंद धीरे धीरे बढ़ता ही जाता है। हमारी विरासतों में इस पर्व को मनाने की जो व्यवस्था बनाई गई है उसमें आनंद की अनुभूति को ही प्राथमिक रखा गया है, मेल मिलाप – रंग गुलाल – सीमित मात्रा में भांग और होली गायन ये सभी आनंद के साधन के साथ जोड़े गए है, जो होली के त्यौहार को आनंद का त्यौहार बना देते है।

होली गायन हमारे समाज का संवाद है, हमारी परंपराओं का संयोजन है, निश्चित रूप से आनंद का साधन है .... बचपन में जब होली की बड़ी बड़ी ग़म्मतों में जाता था और बाद में अपने बड़ों से पूछता था कि होली और भजन में विशेष अंतर क्या है और तब पिताजी और ताऊजी ने जो समझाया वही समझ में आया कि प्रभु के गुणगान में जहां भक्ति रस प्रधान है वही प्रभु का भजन है और जहां आनंद रस प्रधान है, वही होली गायन है। कवियों ने – लेखकों ने आदियोगी आशुतोष भगवान शंकर को भी इस आनंद में समाहित किया आज सदाशिव खेलत होरीऽ और सुनि आई री आजु नई होरी की भनकऽ में प्रभु श्रीराम और माता जानकी का होली आनंद समाहित कर लिया ....इंद्र, कुबेर वरुण, सनकादिक आदि सभी देवताओं को इस आनंद में समाहित किया ...राधा रानी और भुवनमोहन कृष्ण कन्हैया तो आधार ही है इस परंपरा का इस काव्य का ...इस आनंद का !

रे प्रवासी, जाग, तेरे देश का संवाद आया

होली की धूम होली का गायन शहरों में आजीविका के कारण रहने वाले हम सभी चतुर्वेदी बांधवों के लिए अपनी मिट्टी का अपने बचपन का संवाद लगता है I प्रभु की कृपा से गुलमोहर गार्डन, राज नगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद में भी इसी उद्देश्य के साथ विगत चार वर्षों से होली गायन का यह कार्यक्रम निरंतर चल रहा है और निश्चित रूप से निरंतर चलता रहेगा ....हम प्रवासी जागते रहें और अपनी परंपरा के इस संवाद को सदैव जगाते रहें।

इस बार होली गायन का कार्यक्रम सदैव की भांति आदरणीय लोकेंद्र नाथ जी, फरौली एवं आदरणीय नूतन जी, मैनपुरी के सानिध्य एवं मनीष जी, फरौली, दीपांशू जी, फरौली, पंकज जी, होलीपुरा के सहयोग से दिनांक 23 फरवरी 2025 को आयोजित हुआ। व्यवस्थाएं, स्थान, आयोजक सदैव ही समान रहते है, नया होता है आनंद.. जो हर वर्ष नया होता जा रहा है, सफल होता जा रहा है।

वरिष्ठ स्वजन आदरणीय चिंतामणि जी होलीपुरा, कमलेश पांडे जी मैनपुरी, गोकर्ण जी तालगांव, चंद्रकांत जी होलीपुरा, डॉ. प्रदीप जी होलीपुरा, महेश जी बिजकौली, गोपाल जी मैनपुरी, धर्मेंद्र जी पुरा, कौशल जी होलीपुरा, धनेश जी जहांगीरपुर की गरिमामयी उपस्थिति होली गायन के इस कार्यक्रम को सम्मानित करती है।

आदरणीय विपिन पाण्डे होलीपुरा, मनीष जी होलीपुरा, संजीव जी होलीपुरा, समीर जी होलीपुरा, अनुपम जी होलीपुरा, गौरव जी होलीपुरा,अभिनव जी होलीपुरा, मुदित जी मैनपुरी, रत्नेश जी मैनपुरी, शिवम जी मैनपुरी, माधव जी मैनपुरी, विवेक जी (मुक्की) पुरा, प्रदीप जी पुरा ये सभी होली गायक हमारे समाज और इस कार्यक्रम का गौरव है...कुछ विशेष गायकों की अनुपस्थित भी रही इस प्रोग्राम में। इस वर्ष लेकिन प्रभु की लीलाओं का गुणगान, होली की धूम, ढोलक की थाप, गायकों के सुर संवाद, गम्मत का आनंद सदैव की भांति सफल रहा, आयोजकों के उद्देश्य को सफलतम बनाने वाला रहा। होली के महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं..आनंदमगल की शुभ इच्छाओं के साथ पालागन

– **कमल चतुर्वेदी,** (होलीपुरा/गाजियाबाद)

***

दिल्ली

होली मिलन समारोह

2 मार्च 2025 को हर वर्ष की भांति खान मार्केट के सभागार में दिल्ली NCR के चतुर्वेदी बांधवों का होली मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री महेश चंद चतुर्वेदी जी, सभापति सुबह से सभी आगंतुकों का स्वागत करने को तत्पर थे । एक एक कर के कार्यकारिणी सदस्य एवं गणमान्य बांधव सर्वश्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (फरौली), मनीष जी, धनेश जी, कौशल चतुर्वेदी, लोकेंद्र नाथ, विवेक जी (मुक्की) एवं अन्य समय पर पहुंच गए।

श्री महेश जी, ज्ञानेन्द्र जी, लोकेन्द्र जी, मनीष जी, धनेश जी, प्रीति जी, रचना जी आदि ने श्री राधा वल्लभ कृष्ण और वृषभान दुलारी पुष्प अर्पित कर आराधना तथा कार्यक्रम की सफलता की प्रार्थना की।

कुछ समय बाद लोकेन्द्र जी, अशोक जी (होलीपुरा), विपिन

पांडे जी, ज्ञानेन्द्र जी, विवेक जी (मुक्की), मनीष जी, संजय जी, सुधीर जी, मुनीन्द्र जी नोएडा, नीरज जी मैनपुरी, सुशील जी फरीदाबाद, सत्येन्द्र जी वैशाली, नूतन जी गाज़ियाबाद, डॉ प्रदीप जी नोएडा, कौशल जी होलीपुरा, धर्मेश जी वैशाली, मुदित जी नोएडा आदि ने होली गायन आरंभ किया ।

महिलाओं में अनीता जी के नेतृत्व में पल्लवी जी, रचना जी, अनुपमा जी, प्रीति जी, जूही जी, प्रियल जी , हेमलता जी, नीतिका जी, रुचि जी, मृदुला जी, इंदु जी, दया जी ने खूब समा बांधा। इसके उपरांत कार्यक्रम में प्रबुद्ध एवं वरिष्ठ बांधवों का सम्मान किया गया । जिसमे श्री गोपाल किशन जी चतुर्वेदी (नोएडा), लेफ्ट जन विष्णु कान्त जी चतुर्वेदी (नोएडा), सुशील जी फरीदाबाद, नीतिका जी गुरु ग्राम, अशोक जी लोनी, ऋषि जी तरसोखर / नोएडा एवं डॉ प्रदीप जी सम्मिलित थे । सम्मानितों में श्रीमती गीता चतुर्वेदी जी तरसोखर / मैनपुरी /गुरुग्राम, श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी जी पुरा कन्हेरा तथा श्रीमती प्रवीणा जी चतुर्वेदी जी उज्जैन / गुरुग्राम को भी सम्मानित किया गया । इनके सम्मान चिन्ह उनके निवास पर जाकर व्यक्तिगत रूप से देने का दायित्व भाई अभय राज जी द्वारा स्वीकार किया गया।

बिटिया अनिषा नोएडा को होली पर चित्र बनाने के लिए श्री महेश जी ने पुरस्कृत किया तथा ममता जी नोएडा और स्मृति जी दिलशाद गार्डन को गुझिया प्रतियोगिता का संयुक्त विजेता घोषित कर पुरस्कृत किया । गुझियों के निर्णायक मण्डल में विष्णु कान्त जी, मृदुला जी, दीपेन्द्र रावत जी और सुधा जी सम्मिलित थे। इनके अतिरिक्त कमल जी, सुरेन्द्र जी, सुधीर जी नोएडा, डी के चतुर्वेदी गाज़ियाबाद, सुबोध जी नोएडा, गिरीश जी सागर पुर, अनिल जी रोहिणी, नेमी नाथ जी दिल्ली, नीरज जी नोएडा, महेंद्र नाथ जी नोएडा, रोहित मिश्र जी गाज़ियाबाद, सुधीर कुमार जी विकास पुरी, अखिल / प्रतिष्ठा जी वेसटेण्ड, तरुण जी पालम, घनश्याम दास जी पालम, नीता जी पालम, वी एन चतुर्वेदी जी ग्रेटेर नोएडा, अरविंद जी नोएडा, अनुज जी इंदिरपुरम, पुलकित जी नोएडा, अखिलेश जी ग्रेटर नोएडा, अमित जी नोएडा, ज्ञानेश जी, योगेश और सुधा जी आई पी इक्स्टेन्शन, नरेश मिश्र जी, सलिल जी आई पी इक्स्टेन्शन सुभाष जी रोहिणी प्रशांत जी लोधी कालोनी, अभय राज जी गुरु ग्राम, अनुराग जी गुरुग्राम बी के चौबे जी इंदिरपुरम ऋषि जी नोएडा प्रतीक जी, नवनीत जी शिशिर जी जयेन्द्र जी, मेज जन दीपेन्द्र रावत जी, प्रदीप जी रोहिणी, प्रभाष जी रोहिणी तथा अन्य गणमान्य बांधवों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

फिर सभी बांधवों ने सुस्वादु भोजन का आनंद लिया । गौरव जी तरसोखर की भोजन व्यवस्था तथा नवनीत जी इटावा की गुझियों सभी को खूब भाईं। कार्यक्रम का समापन लोकेन्द्र जी ने सभी आए हुए बांधवों का धन्यवाद किया।

धन्यवाद
पालागन सहित

– लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव
श्रीमाथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली

***

नोयडा/ग्रेटर नोएडा

कल होली मिलन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी बंधुगण भगिनी, वरिष्ठजन और बच्चों का हार्दिक अभिनन्दन

और धन्यवाद।

एक बहुत ही सफल आयोजन आप सबकी उपस्थित से सम्पन्न हो सका। पूरे दिल्ली, NCR के बंधुगण भगिनी शामिल हुए। हमारे रिषभ जी, टीकेन्द्र नाथ जी, अभिजीत, कपिल और कुछ लोग देहरादून, ग्वालियर, आगरा और जयपुर से भी आये थे। अत्यंत मधुर होली गायन हुआ जिसमें प्रतिभा जी, मिनी जी, रेनू जी, रचना जी, सरिता जी, अनीता जी,आभाजी, नीलू जी, उषा जी, रेखाजी, गुड्डी जी, तुषार जी, टीकेंद्र नाथ जी, धर्मेश जी, नलिन जी, अशोक जी आदि ने मन मोहक होली गीत सुनाये। बेटी ईशा ने अपने भाई के साथ मिलकर बहुत ही सुन्दर गायन प्रस्तुत किया। बेटी मानस्वी ने कार्यक्रम का बहुत सुंदर संचालन किया। आप सबने भारी मात्रा में आकर जो हम सबका उत्साह बढ़ाया उसके लिए हम सब आप सभी के आभारी हैं, गौरवान्वित हैं। ऐसे ही हम सब मिलजुल कर रहे तो सभी एक दूसरे को जानेंगे और आपसी प्रेम भाव बढेगा। सभी बंधुगण भगिनी वरिष्ठजन और बच्चों को यथायोग्य और पुनः अभिनन्दन, आभार। सादर पालागन

–विष्णु कांत चतुर्वेदी, अध्यक्ष

***

आगरा

दिनांक 17/04/2025 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा रजि० आगरा का होली मिलन समारोह का आयोजन बड़े ही हर्ष उल्लास एवं उमंग उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। समाज

के प्रतिष्ठित जनों ने भाग लिया और होली गायन में आगे बढ़ कर अपनी उपस्थित सुनिश्चित करी मिलन में महिला प्रकोष्ठ का भाग लेने से समारोह में चार चांद लग गए। सुमधुर ठंडाई के साथ मीठी मीठी गुजिया और नमकीन के साथ स्वादिष्ट अल्पाहार के साथ सम्पन्न हुआ मिलन के पश्चात अध्यक्ष मुकेश चतुर्वेदी ने सभी का फूल वर्षा कर स्वागत किया। उपाध्यक्ष राजीव जी ने पालागन पटका एवं संयुक्त मंत्री मनोज जी ने पालागन मोती माला पहना कर आशीर्वाद लिया। अंत में महामंत्री राकेश जी ने कोषाध्यक्ष रोहित जी को आयोजन करने के लिए एवं उपस्थित सभी को धन्यवाद दिया।

-मुकेश चतुर्वेदी, अध्यक्ष

***

कानपुर

दिनांक 16/03/2024 को श्रीमती गीता चतुर्वेदी जी के निवास पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के तत्वावधान में महिला प्रकोष्ठ,कानपुर द्वारा होली मिलन का कार्यक्रम कानपुर

समाज की महिलाओं के जोश एवं स्नेह एवं उत्साह के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ , जिसमें ज्योति जी,अंजू जी,निधि जी,प्राची जी,मीता जी,शिखा जी, उपमा जी, साधना जी,विभा जी,अर्चना जी, दीपिका जी, मनीषा जी रंजना जी, नेहा जी नुपुर जी गीता जी, अंजलि जी ,रेनू जी, गीतिका जी, अंजुला जी, अलका जी आदि महिलाओं एवं बच्चों ने होली मिलन में समूह गायन व समूह नृत्य का आनन्द लिया।

आभा चतुर्वेदी -कानपुर
सदस्य- महिला प्रकोष्ठ
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

छपते-छपते

पंती को देखने के लिए सोने की सीढ़ी चढ़ी दादी

बाह (दर्पण व्यू)। हेरीटेज विलेज होलीपुरा में साल भर में जन्म लें वाले बच्चों को होली की आग दिखाने की परम्परा के निर्वहन को देश भर से चतुर्वेदी समाज गांव आता है। गोहाटी से पहुंचे भरत चतुर्वेदी की 99 साल की मां शीला देवी ने सोने की सीढ़ी पर चढ़ कर खिड़की से अपने पंती का मुंह देखने की रस्म का निर्वहन किया। भावुक कर देने वाले इस पल के सैकड़ों लोग गवाह बने। इस दौरान अशोक चतुर्वेदी, करुणेश चतुर्वेदी, मनोज चतुर्वेदी, प्रभाकर चतुर्वेदी, राकेश चतुर्वेदी, अनुराग, अंकित, अर्पित, अपूर्व, अभय, आकाश, संदीप, राखी, अंजू अपने गांव की प्राचीन हवेलियां देख कर सुखद आश्चर्य में डूबे बिना नहीं रहे। शहर के कोलाहल से दूर गांव के शांत माहौल में उनको सुकून मिला। गांव के इतिहास के बारे में अपने पुरखों से जानकर अपनी विरासत पर मुस्करा उठे।

होली खेले तो अइयो नंद लाल गाँव बरसाने में

फिरोजाबाद। चैबान मुहल्ला स्थित हरीश चतुर्वेदी के आवास पर होलिका दहन के दिन एवं दुली के मुहल्ला स्थित बादशाह वकील साहब के परिवार व्दारा होली धूलैंडी के दिन अपने अपने परिसर में रात्रि 8 बजे से चतुर्वेदी समाज की पुरानी पारंपरिक होली गायन वादन की परंपरा का निर्वहन करते हुए होली पर्व पर समाज गायकी की बानगी पेश की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए हरीश चतुर्वेदी के पुत्रों विनायक चतुर्वेदी, विधुकांत चतुर्वेदी विभाषु चतुर्वेदी, तुषार चतुर्वेदी ने सामूहिक रूप से होली गीत सुनाते हुए कहा, अबीर गुलाल को मारत, मटक चटक ऐसी सुपर चाल, एक छोरी आज मची श्याम संग होली एवं छम छम बाज रही पायलिया, कौन बनाय दी पाय पैजनिया कौन बनाय दी करधनियां छम छम बाज रही पैजनिया। एवं आज बिरज में होली रे रसिया, होली रे रसिया बरजोरी रे रसिया, कोन के हाथ कनक पिचकारी कोन के हाथ कमोरी रे रसिया, तथा गारी ना देऊ जसुदा के लला होरी खेलन आए हो तो खेलो भला, तथा होरी हो ब्रज राज

सुना पुरानी होली गायकी की यादों को ताजा कर देते हैं। वहीं चिरपरिचित होली गायक वीरेंद्र बंसल ने बरसाने की होली का दृश्य पेश करते हुए सुनाया, होली खेले तो अइयो नंद लाल गाँव बरसाने में एवं बहिया पकड़ के मरोड़ी लला मोसे खेलो ना होली। पंकज झा ने सुनाया,रंग डारो ना हाय बीच बाजार, श्याम मैं तो मर जाऊंगी । आज ही पहनी मैंने नई चुनरिया बामे लगे हैं गोटा किनरिया। ग्वालियर से पधारे टीकेंद्र नाथ चतुर्वेदी टीनू ने चन्द्रपुर की प्रसिद्ध होली सुनाई आज श्याम मेरे गांव है आए,होली खेलन शाम सबेरे , आए अबीर गुलाल संग लाए। प्रवीन पाण्डेय ने अपनी बुलंद सुनाते हुए कहा ,शिव सो शिवाय यह बोली मैं तो खेलूंगी होली, मेरे मन कछु ऐसी आवे नई नई खेलूं होली,भूतन को मैं करू भूत की भोलाय कर दूं थोड़ी पहनाय दूं लहंगा चोली। तबले पर संगत ऋषि कुमार ने दी । संचालन वीरेंद्र बंसल ने किया। इस अवसर पर अनूप चंद्र जैन ,उधोगपति प्रदीप गुप्ता, डाक्टर अपूर्व चतुर्वेदी, डाक्टर एसपीएस चैहान,अतुल चतुर्वेदी, अनिल उपाध्याय, रामस्नेही लाल यायावर,नृपेन्द्र चतुर्वेदी, शैलेन्द्र चतुर्वेदी, अरविंद चतुर्वेदी, दिलीप चतुर्वेदी, पीयूष चतुर्वेदी, राजीव चतुर्वेदी एफसीए ,विनय चतुर्वेदी,निर्भय चतुर्वेदी,नमन चतुर्वेदी प्रवीन मिश्रा, विनोद

बोले आगरा
www.livehindustan.com
हिन्दुस्तान
आगरा, रविवार, 16 मार्च 2025
08

बाह तहसील के गांव होलीपुरा में बोले आगरा के तहत हुए संवाद में चतुर्वेदी समाज के लोगों ने अपनी परंपरागत होली की विशेषताएं बतायीं। युवा पीढ़ी से गांव की संस्कृति और परंपरा के बचाव के लिए आगे आने का आह्वान किया।

अब जब त्योहारों पर परंपराएं समाप्त हो रही हैं तो बाह के होलीपुरा गांव में होली के मौके पर अलग ही नजारे रहे। यहां रंगों के त्योहार पर चतुर्वेदी समाज के लोगों ने अपनी परंपरा को कायम रखा। देश के बड़े -बड़े शहरों से इस समाज के लोग होलीपुरा पहुंचे। यहां हर तरफ पालगन शब्द गूंज रहा है जो कि चतुर्वेदी लोग बड़ों के अभिवादन के लिए इस्तेमाल करते है। गांव में इस समय महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि प्रांतों के विभिन्न शहरों से चतुर्वेदी समाज के लोग मौजूद है। चार दिवसीय उत्सव की धूम जारी है।

होली पर खींच लाया होलीपुरा का अपनापन

बाह तहसील का एक गांव होलीपुरा। यहां होली की परंपरा आज भी यहां के निवासियों को खींच लाती है। वे देश-प्रदेश के किसी भी क्षेत्र में हों। होली पर जरूर गांव आते हैं। और गांव की माटी की सोंधी-सोंधी खुशबू को अपने साथ ले जाते हैं। इस बार भी होलीपुरा में देशभर से चतुर्वेदी समाज के लोग पहुंचे। तीन दिवसीय फाग का लुत्फ उठाया।

वैसे तो बटेश्वर, तालपुरा और पुरा कनेरा और उसके आसपास के कई गांवों में चतुर्वेदी समाज के लोग बड़ी संख्या में हैं लेकिन होलीपुरा को चतुर्वेदी समाज का ही गांव कहा जाता है। यहां की होली सिर्फ बाह ही नहीं बल्कि पूरे ब्रज में प्रसिद्ध है। 12 मार्च की शाम से ही यहां होली खेलने के लिए चतुर्वेदी समाज के लोगों का पहुंचना शुरू हो गया। 13 मार्च को होलिका दहन के साथ ही यहां चार दिवसीय उत्सव शुरू हो गया। देश के विभिन्न प्रांतों में रहने वाले समाज के लोग यहां पहुंच चुके थे। इस गांव में तीन प्रमुख होलियां दहन की गयीं। इसमें सभी सामूहिक रूप से भाग लिया। लेकिन यह होली यूं ही नहीं जलाई गई। चतुर्वेदी समाज के लोगों ने सामूहिक रूप से गायन किया। ढोल-मंजीरे लगातार बजते रहे। होली जलाने के बाद बताशे और इलायची दाने का प्रसाद वितरित हुआ। 14 मार्च को रंग और गुलाल की होली खेली गयी। 15 मार्च को जहां हर ओर होली थम गयी लेकिन होलीपुरा में इसकी धूम रही। यहां के चतुर्वेद समाज के लोगों ने गुलाल की होली खेली। फिर फाग की भी महफिल जमी। 16 मार्च रविवार को भी यह दौर जारी रहेगा।

सदियों की परंपरा को संवारा नवयुग में: वैसे तो यह सामूहिक गायन और पारंपरिक होली खेलने की परंपरा सदियों पुरानी है। लेकिन करीब 70 साल पहले इस परंपरा को व्यवस्थित किया रामशरन चतुर्वेदी हकीम, काका शरण राम, लोकेंद्र बाबू, बुद्धप्रकाश हकीम, शंभूनाथ चतुर्वेदी आदि ने। इसके बाद फिर जब युवा शहरों की ओर चले तो सन् 1999 से इस परंपरा को फिर बचाने की कोशिश की गई। इस प्रयास में सफलता भी मिली। होलीपुरा में यह परंपरा जारी है। कोमलचंद चतुर्वेदी, केदारनाथ चतुर्वेदी, फणींद्रनाथ चतुर्वेदी के साथ जुगल किशोर चतुर्वेदी प्रभात चतुर्वेदी, टिंकू, अरुण चतुर्वेदी, संजय चतुर्वेदी, कल्पेश चतुर्वेदी, विमल, मुकेश, मनीष, दिनेश, संजय चतुर्वेदी, सौरभ चतुर्वेदी, धीरेंद्र चतुर्वेदी, भरत चतुर्वेदी आदि के प्रयास रंग लाए।

बनती है भांग की ठंडाई और बर्फी: होली पर हर घर में भांग की ठंडाई और भांग की बर्फी बनती है। इन तीन दिनों में सेवन करने की सभी को छूट होती है। बच्चे और महिलाएं भी इसका सेवन कर सकते हैं। लेकिन इसमें बहुत कम भांग होती है।

■ कंटेंट: वीर कुमार दुबे, रणवीर सिंह

होलीपुरा गांव में शनिवार को होली की मस्ती छाई रही। यहां फाग गाते चतुर्वेदी समाज के लोग।

सामूहिक गायन का प्रचलन

होली वाले दिन हुरियारों की टोली सामूहिक रूप से होली गीत गाती हुई गांव में घूमती है। एक दूसरे के गुलाल और गले लगाकर प्यार बरसाया जाता है। भाई दूज वाले दिन गांव के बीच के मोहल्ले में सामूहिक गायन होता है। क्षेत्रीय निवासी प्रभात चतुर्वेदी के अनुसार इस गायन में बटेश्वर, चंदरपुर, बाह, तालगांव पुरा कनेरा आदि गांवों के लोग सामूहिक गायन करते हैं। कटरा ऊपर मोहल्ला में शाम को करीब 500 लोगों की दावत दी जाती है, जिसकी व्यवस्था मोहल्ले के लोग करते हैं।

मदावरी में कठिन गायन है धमार

इस गांव के लोग जो लोकगीत गाते हैं, उसे मदावरी होली कहा जाता है, जिसका कई पुस्तकों में उल्लेख है। काफी, चाल, टेढ़ी, पीलू, धमार इस गायकी के अंग हैं। इसमें सबसे कठिन है धमार गायन, जिसे इतने ऊंचे सुरों से गाया जाता है कि कोई एक व्यक्ति इसे गा नहीं सकता। इस कठिन गायन को लोग अब भूलते जा रहे हैं। हालांकि इसके संरक्षण के लिए कोलकाता के विपुल चतुर्वेदी ने लोकगीतों को अपने सुरों में रिकार्ड कर उसकी सीडी तैयार की है।

यहां दस गांवों का सम्मेलन आयोजित

माटी की पुकार पर होली का आयोजन गांव में शुरू हुआ जिसमें 10 गांव का सम्मेलन आयोजित किया गया। इससे चतुर्वेदी समाज के करीब 20 घर फिर आबाद हो गये। होलीपुरा के भरत चतुर्वेदी बताते हैं कि माटी की पुकार अभियान के बाद गांव में समाज के लोगों का आवागमन बढ़ गया। गांव के ही अमित चतुर्वेदी बताते हैं कि पहले गांव की ओर अभियान चला था। उसके बाद फिर से यहां त्योहारों पर रंगत लौटने लगी। अब चार दिवसीय उत्सव होता है।

इनकी बात

"जीवन में कितनी भी व्यस्तता हो होली पर गांव आते ही हैं। यहां का प्यार अपनापन जीवन में नई उमंग भर देता है।" -प्रभात चतुर्वेदी

"जब से याद है, सिर्फ दो होलियां ही गांव से बाहर बीती हैं। होलीपुरा पर होली का कोई उपमा नहीं है। गांव की माटी की बात ही निराली है।" -ऋषि कुमार चतुर्वेदी

"खूब तरक्की की देश दुनिया में चतुर्वेदी समाज के लोगों ने नाम कमाये लेकिन फिर यहां की खुशबू परंपरा और संस्कृति हमें खींच लाती है।" -मनोज चतुर्वेदी

"होली पर होलीपुरा में हर्ष उल्लास से उत्सव मनता है। देश भर से चतुर्वेदी समाज के लोग एकत्रित होते हैं। फाग होता है। मस्ती छा जाती है।" -अरुण चतुर्वेदी

"होली का त्योहार हमारे लिये विशेष है। भूले बिछड़े यहां इस मौके पर मिलते हैं। हंसी ठिठोली होती है पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं।" -संजय चतुर्वेदी

"गांव में होलिका दहन के बाद फाग गाये जाते हैं। रंगों के पर्व को धूम धाम से मनाया जाता है। सामूहिक भोज के साथ हुरियारों की महफिल जमती है।" -भरत चतुर्वेदी

"गांव आने के बाद स्वर्ग की अनुभूति होती है। बंद पड़े घर खुल जाते हैं। और फिर पुराने यार-दोस्त मिल जाते हैं। फाग गायन होता है।" -मधुसूदन चतुर्वेदी

"गांव की गलियां और पुरानी हवेलियां होली पर आबाद हो जाती हैं। बच्चों को गांव की संस्कृति जानने का मौका मिलता है।" -अनुज चतुर्वेदी

"होली पर होलीपुरा का अनुभव कुछ अलग होता है। चार दिन यहां कार्यक्रम चलते हैं। समाज के सभी लोग देश भर से आकर अपनी उपस्थित दर्ज कराते हैं।" -नीरद चतुर्वेदी

"होली का पर्व धूमधाम से मनाया गया है। देशभर से चतुर्वेदी समाज के लोग यहां पहुंचते हैं यह पर्व गांव की माटी को ना भूलने की प्रेरणा भी देता है।" -पंकज चतुर्वेदी

"हम होलीपुरा की ओर खिंचे चले आते हैं। यहां हमारी जड़ें हैं। हमारी पहचान है। होलीपुरा में होली का विशेष महत्व है।" -भरत चतुर्वेदी

"देश भर का चतुर्वेदी समाज होली पर गांव में इकट्ठा होता है। जमकर होली खेली जाती गीत गायन होता भांग और ठंडाई का खूब सेवन होता है।" -राकेश चतुर्वेदी

"होली पर चार दिन तक गांव में आयोजन चलते हैं बंद पड़े घर खुल जाते हैं। गांव की वीरान गलियां अपनों की आवाजों से चहक उठती हैं।" -लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी

"नई पीढ़ी भी होली पर गांव पहुंचकर पूर्वजों की विरासत को जानती है। यह त्योहार गांव में धूमधाम से मनाया जाता है।" -प्रभाकर चतुर्वेदी

"देश भर से गांव के लोग खिंचे चले आ रहे हैं। यहां की माटी कि खुशबू उन्हें आकर्षित करती है। होली पर गीत मल्हार आदि के आयोजन होते हैं।" -देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी

"होली का पर्व धूमधाम से मनाया गया है। देशभर से चतुर्वेदी समाज के लोग यहां पहुंचते हैं यह पर्व गांव की माटी को ना भूलने की प्रेरणा भी देता है।" -प्रफुल्ल चतुर्वेदी

"परंपरा को जीवित बनाये रखने के लिये प्रयास किये गये हैं जिसका नतीजा है कि गांव में कई घर फिर से जीवित हुए हैं। गांव की होली काफी प्रसिद्ध है।" -अमित चतुर्वेदी

उल्लास | बाह के फरैरा गांव में खेली जाती है राजपूताना होली, तीन दिन तक होते हैं आयोजन, फाग की रहती है धूम

परंपरा-संस्कृति को समेटे है फरैरा की राजपूताना होली

बाह, हिन्दुस्तान संवाद। बाह तहसील के गांव होलीपुरा, कमतरी और पुरा कनेरा में जहां चतुर्वेदी समाज की होली पूरे ब्रज में प्रसिद्ध है वहीं फरैरा में राजपूताना होली खेली जाती है। क्षेत्र के बुजुर्ग बताते हैं कि करीब 70 से साल से राजपूताना होली फरैरा में आयोजित हो रही है। इस होली की अपनी विशेषता है। नारायण सिंह प्रधान झाऊ लाल लम्बर, किन्ना लाल दुर्जन सिंह, तेज सिंह आदि ने राजपूताना होली में अहम भूमिका अदा की है। इस बार भी यहां राजपूताना होली खेली गई। शनिवार को भी इसका दौर जारी रहा।

बाह के ब्लाक प्रमुख लाल सिंह चौहान ने बताया कि आधुनिक युग में होली मनाने की परंपरा नष्ट हो रही है। उन्होंने बताया कि पुरानी संस्कृति के अनुसार शाम ढलते ही होली के गीत गाने वाली टोली जुटती थी। अब यह कम नजर आता है। लेकिन हम फरैरा गांव में यह परंपरा बचाने का प्रयास कर रहे हैं। यहां सालों से राजपूताना होली आयोजित होती आ रही है। इस बार भी गांव के बुजुर्गों और युवाओं ने मिलकर राजपूताना होली खेली और परंपरा निभायी। इधर भूरे सिंह [illegible] ने बताया कि 13 मार्च को होलिका दहन के साथ ही राजपूताना होली की शुरूआत हो गयी। सिर्फ 14 मार्च ही नहीं बल्कि 15 मार्च शनिवार को गांव में होली जारी रही। हालांकि अब पहले जैसा जोश-खरोश इस बार की होली में नहीं दिखा। युवा वर्ग इससे कट रहा है। उस पर सोशल मीडिया का प्रभाव है। हम बुजुर्गों की कोशिश है कि किसी तरह परंपरागत होली को बचाए रखें।

"होली रंगों का त्योहार है। पुरानी परंपराएं बची रहें। यह हमारी जिम्मेदारी है। मोबाइल और हुड़दंग के दौर में फाग आदि युवा पीढ़ी को रास नहीं आ रहे हैं।" -रामसहाय व्यापारी

"फाग के महीने में होली गायन का आनंद ही अलग है। राजपूत होली हमारी परंपरा है यह सालों से आयोजित करा रहे हैं। युवा पीढ़ी इनसे दूरी बना रही है।" -ब्रजमोहन नीपुत्रा

"राजपूताना होली फरैरा गांव की विशेषता है। पुरानी परंपराएं अब युवा पीढ़ी नहीं अपना रही है। फरैरा गांव में राजपूत होली का आयोजन सालों से हो रहा है।" -साहब सिंह

"राजपूत होली गांव में सालों से आयोजित हो रही है। यह परंपरा कब तक चल पायेगी यह नहीं कहा जा सकता आधुनिक दौर में इस तरह के आयोजन सिमट रहे हैं।" -लाल सिंह चौहान

फरैरा गांव में राजपूताना होली के मौके पर फाग गायन करती टोली।

शाखा समाचार फ़रीदाबाद

- संजय चतुर्वेदी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शाखा सभा फ़रीदाबाद ने होरियों की ज़ोरदार धूम के बीच आयोजित किया होली मिलन समारोह l रविवार 23 मार्च 2025 को सेक्टर 7 स्थित महेश्वरी भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में अब तक की सबसे अधिक संख्या में लोग सम्मिलित हुए। स्थानीय बांधवों और उनके परिवारों के अलावा नॉएडा, गाज़ियाबाद, लोनी और दिल्ली से भी आमंत्रित बान्धवों ने कार्यक्रम की शोभा बढाई l कार्यक्रम का प्रारंभ श्री शैलेन्द्र दिल्ली से पधारे श्री मनीष चतुर्वेदी (होलीपुरा), लोनी से आये श्री अशोक पांडे (होलीपुरा) और श्री चिंतामणि पांडे (होलीपुरा), नॉएडा से आये श्री विपिन पांडे (होलीपुरा), श्री नलिन चतुर्वेदी (होलीपुरा), गुडगाँव से आये श्री अभिनव चतुर्वेदी (होलीपुरा), गाज़ियाबाद से आये श्री लोकेन्द्र चतुर्वेदी (फरौली) और श्री विवेक चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा), ग्रेटर नॉएडा से आये श्री नृपेन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी), ग्वालियर से आये श्री आनंद चतुर्वेदी (होलीपुरा) आदि ने फ़रीदाबाद शाखा के होली मिलन में सम्मिलित होकर ना केवल कार्यक्रम की शोभा बढाई बल्कि होली गायन की चतुर्वेदियों की परंपरा कितनी मज़बूत है इसका सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कियाl क्या काफी, तो क्या रसिया, क्या भजन तो क्या धमार, गायन

की कोई भी विधा नहीं जिसकी सुंदर प्रस्तुति इस कार्यक्रम में ना हुई हो। पारंपरिक रूप से होलीपुरा को होली के शास्त्रीय विशेष बात यह रही कि महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर इस पारंपरिक होली गायन में अपनी दक्षता का मधुर प्रदर्शन किया। श्री राघव चतुर्वेदी (फरौली) ने स्वरचित होली गायन द्वारा सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की व्यवस्था संचालित की गई जिसमें कुछ नाम हैं अध्यक्ष श्री सुशील जी, उपाध्यक्ष श्री अशोक जी, सचिव श्री संजय जी एवं कोषाध्यक्ष श्री रुचिर जी, श्री राजकुमार जी आदि ने भी अपनी गरिमामायी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

पुरा कन्हैरा में सजी होली की महफिल, खूब हुई हंसी-ठिठोली

सत्येंद्र दुबे • जागरण

बाह: फागुन के उल्लास और उमंग के बीच देश भर के कोने-कोने में रह रहे चतुर्वेदी समाज के लोग परंपरा को जीवित रखने के लिए गांव पुरा कन्हैरा में आ गए हैं। होली के तीन दिवसीय आयोजन में शामिल समाज के महिला-पुरुषों ने होली पर गायन किया। घंटों हंसी-ठिठोली और पद गायन में बीत गए। पुरा कन्हैरा, होलीपुरा, कमतरी, चंद्रपुर और कछपुरा चतुर्वेदी समाज के गांव हैं। यहां उनकी हवेलियां हैं। परिवार के लोग देश-विदेश में नौकरी और व्यवसाय कर रहे हैं लेकिन अपने गांव से उनका नाता टूटा नहीं है। परंपरा को जीवित रखने के लिए ये लोग होली के त्योहार पर अपने गांव अवश्य आते हैं। पुरा कन्हैरा में होलिका दहन के बाद तीन दिवसीय उत्सव शुरू हो गया है। शहरों में नौकरी और व्यवसाय करने वाले लोग

पुरा कन्हैरा गांव में होली गायन करते चतुर्वेदी समाज के लोग • जागरण

इन गीतों पर झूमे हुरियारे

गाली ना दे मोहि यसोदा के लाला, श्याम संग मैं खेल रही होली... रंग में है रही गोरी श्याम मोहो ना खेलो होली, होरी हो ब्रज राज दुलारे, नैननि में पिचकारी दई होरी मोपै खेली ना जाए।

यहां होली गायन कर खुशी बांट रहे हैं। होलिका दहन के बाद पुरा कन्हैरा गांव में बाबा वंशीधर चौबे की चौपाल और देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी के आवास पर होली की महफिल सजी। हुरियारे सामूहिक रूप से होली के गीत गाते हुए एक-दूसरे को गुलाल लगाकर गले मिल रहे थे। महिलाओं की टोली अलग फिल्मी गानों पर होली के गीत गाकर झूम रही थीं।

होली पर मेलमिलाप हो जाता है। होली गायन की परंपरा पुरखों के समय से चली आ रही है। इसे आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी, व्यवसायी

समाज के लोग दूरदराज रह रहे है। होली पर सभी गांव में आते हैं। होली पर इस तरह के आयोजन आपसी प्रेम की डोर को मजबूत करते हैं।

विकास चतुर्वेदी, स्थानीय शिक्षक

ब्रज क्षेत्र की होली देश ही नहीं विदेशों में भी ख्याति प्राप्त है। इसे जीवंत रखने और आपसी मेलजोल के लिए हर साल कार्यक्रम में आते हैं।

नागेंद्र नाथ चतुर्वेदी व्यवसायी

होली गायन की परंपरा को युवाओं तक पहुंचाने की कोशिश है। बच्चे भी इसमें रुचि लेंगे तो परंपरा जीवित रहेगी। उनका जुड़ाव गांव से बना रहेगा।

भुवनेश कुमार चतुर्वेदी, व्यवसायी

ये रहे मौजूद: प्रमुख लोगों में देवेंद्र चतुर्वेदी, भुवनेश कुमार चतुर्वेदी, नागेंद्र नाथ चतुर्वेदी ,सूरज चतुर्वेदी, मनोज चतुर्वेदी, गगन चतुर्वेदी, हितेश चतुर्वेदी, देवेश चतुर्वेदी, मधुर चतुर्वेदी, प्रवेश चतुर्वेदी, रमेश चतुर्वेदी ,धर्मेंद्र चतुर्वेदी, पंकज चतुर्वेदी, पीयूष चतुर्वेदी, सतीश चतुर्वेदी पूर्व मंत्री महाराष्ट्र सरकार, विकास चतुर्वेदी मौजूद रहे।

समाज समाचार

- श्री अभिषेक चतुर्वेदी, मैनपुरी ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5100/- प्रदान किये। (र.क्र.3100)

***

- चि. तनिष्क पौत्र स्व. प्रभूशंकर चतुर्वेदी के जन्मदिन के अवसर पर श्री प्रदीप कुमार चतुर्वेदी (फरौली/दिल्ली) ने 1100/- महासभा को अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए। - बधाई (र.क्र.-3105)

***

- सौ अशिता सुपुत्री श्री अजीत चतुर्वेदी (मैनपुरी/इंदौर) INFOSYS में ही कार्यरत रहते हुए ही प्रोन्नति लेकर फरवरी 25 में आस्ट्रेलिया गई। बधाई

***

- चि. गौरव व चि. गौरांग सुपुत्र श्री अरुण चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्री राधेलाल जी चौबे (खोले के हनुमानजी,जयपुर) के शुभ विवाह के अवसर पर 2100/- महासभा की अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-3122)

बिछड़े स्वजन

* श्री थर्मेश चतुर्वेदी 'थन्नू' (चंद्रपुर/भोपाल) का निधन दिनांक 15.03.2025 को भोपाल में हो गया।

***

* श्रीमती क्षमा चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री श्रीराम चतुर्वेदी (गाजीपुर/डिबाई/बुलंदशहर) का फरीदाबाद में 7 फरवरी 2025 को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

***

* श्रीमती यशोदा (गुड्डो) जी पत्नि स्व. प्रदीप जी (होलीपुरा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 26 फरवरी 2025 को सूरत में अपने पुत्र के पास हो गया।

***

* श्री नागेंद्र चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री रविंद्र नाथ चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/ग्रेटर नोएडा) का स्वर्गवास दिनाँक 28 फरवरी को हो गया।

***

* श्रीमती शारदा चौबे धर्मपत्नी स्व0 नेमचन्द्र जी (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास 93 वर्ष की आयु में ग्वालियर में हो गया है।

***

* श्रीमति ऊषा चतुर्वेदी पत्नी स्व. शशिकांत चतुर्वेदी (चंद्रपुर/आगरा/जयपुर) का निधन दिनांक 09 मार्च की रात्रि को जयपुर में हो गया।

***

* श्री धीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री नरेंद्र नाथ चतुर्वेदी (बयासी जी) का देहावसान दिनाँक 12 मार्च 2025 को नोएडा में हो गया।

***

* श्री गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (इच्छु जी) (सिकंदरपुर/कानपुर/इंदौर) का दिनाँक 13/03/2025 को इंदौर में अपने बड़े पुत्र शेखर के पास निधन हो गया।

***

* श्री कोमल चतुर्वेदी पुत्र स्व. दीनदयाल चतुर्वेदी (तालगांव) का दिनाँक 17/03/25 को तालगांव में निधन हो गया।

***

* श्री विवेक चतुर्वेदी सुपुत्र स्व० जगदीश प्रसाद जी (भैयो भाईसाहब) (होलीपुरा/लखनऊ) का विगत दिनाँक 16/03/2025 को 56 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.
आपकी खुशियों का
अखंड दीप!
अक्षय तृतीया का अर्थ ही है... जो कभी कम न हो।
ठीक उसी तरह, आपकी रसोई की गर्माहट,
स्वाद और खुशियाँ भी बनी रहें।
हम आपकी हर खुशी, हर पर्व, हर विशेष पल के साक्षी हैं।
आपके हाथों से बने पकवान जब परिवार में प्रेम घोलते हैं,
हमारी सेवा उसमें सुरक्षित, सेहतमंद और सच्चा सहयोग देती है।
आपका हर दिन समृद्धि से भरा हो, यही हमारी शुभेच्छा है।
अक्षय तृतीया की
हार्दिक शुभकामनाएँ!
रेक्वा गॅस
एजन्सी
द्र.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495.
rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 3115)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' अप्रैल 2025

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

राजनगर, होलीमिलन

स्वर्ण रेसीडेंसी, साहिबाबाद

(र.क्र. 2300–8/12)